वर्ष 44 अंक 03 मार्च 2017

`15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 03 ● मार्च 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
7. अनमोल वचन
11. समाचार
12 दादा जी
20. वर्ग पहेली
24. पहेलियां
30. कभी न भूलो
43. आपके पत्र मिले
44. पढ़ो और हँसो
48. रंग भरो परिणाम
50. बुद्धि की परख

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

विशेष / लेख

8. ग्लोबल वार्मिंग
: रूपनारायण काबरा

16. अब पेड़ पर भी ...
: कमल सोगानी

19. माचिस की कहानी
: किरण बाला

21. कृष्णमृग
: डॉ. परशुराम शुक्ल

28. ट्री स्लॉथ
: वैदेही शर्मा

29. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

34. प्रेरक व्यक्तित्व : दीपा मलिक
: हरजीत निषाद

38. क्या गूलर में फूल नहीं होता?
: गोपाल जी गुप्त

40. हरड़
: राजकुमार जैन

46. प्रश्न तुम्हारे, उत्तर हमारे
: विभा वर्मा

कविताएं

6. होली आ गई
: गफूर स्नेही

17. रहना धुन के पक्के
: घमंडीलाल अग्रवाल

25. प्यार ही सिखाती होली
: किशोर 'स्वर्ण'

25. सबको गले लगाती
: राजेन्द्र निशेश

42. हम बच्चों के ...
: डॉ. परशुराम शुक्ल

47. रंग बिरंगी होली, जली होली
: हरजीत निषाद

कहानियां

9. होली का रंग
: फारुख हुसैन

18. जैसी संगति वैसा रंग
: किशोर डैनियल

26. पारूल की तरकीब
: राजकुमार जैन 'राजन'

31. अनोखी होली
: डॉ. दर्शन सिंह आशट

39. लुकमान की भक्ति भावना
: विभा वर्मा

सबसे पहले

एक विद्यार्थी ने कक्षा में अपने अध्यापक से पूछा– "सर, आप हमेशा कहते हैं कि हर विद्यार्थी को अपना लक्ष्य अवश्य निर्धारित करना चाहिए। हम लक्ष्य तो निर्धारित कर लेते हैं परन्तु वह पूरा नहीं हो पाता। इसको कैसे पूरा करें?"

अध्यापक ने बड़े प्यार से बच्चों को समझाना आरम्भ किया। हम सभी को अपना लक्ष्य तो अवश्य ही निर्धारित करना चाहिए परन्तु साथ ही यह भी देख लें कि उसको पूरा करने का मेरा प्रयास कैसा है? किसी और को देखकर कि वह अमुक कार्य कर रहा है तो मुझे भी वह कार्य करना है, ऐसा नहीं होना चाहिए।

पहले हम अपनी रुचि के अनुसार और उत्तम उद्देश्य से किसी कार्य को चुन लें। फिर अपनी योग्यतानुसार पूर्ण लगन और अनुशासन के साथ उस कार्य में जुट जाएं। इसके साथ ही हमें अपने आप पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि यह लक्ष्य मैं अवश्य ही प्राप्त कर लूंगा। किसी भी प्रकार की कोई भी कठिनाई मुझे अपनी मंजिल पर पहुँचने से नहीं रोक सकेगी। क्योंकि कठिनाईयों को पार करना और उनसे अनुभव प्राप्त करना हमारे व्यक्तित्व में निखार लाता है। अन्ततः हम पूर्ण शक्ति, हौंसले और संयम के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

सभी विद्यार्थी अध्यापक की बातों को सुनकर अपने में नई शक्ति एवं ऊर्जा का संचार होता देख रहे थे और आने वाले समय में अपने निर्धारित लक्ष्य को पूर्ण करने में सक्षम दिखाई दे रहे थे।

साथियों! हम में भी अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए संयम के साथ–साथ अडिग विश्वास एवं साहस होना चाहिए। अगर हमारे अन्दर दृढ़–निश्चय और हौंसला हो अर्थात् पर्वत जैसा हौंसला हो तो कोई भी कार्य सहज में हो जाता है।

एक पर्वतारोही ऐवरेस्ट की चोटी पर नहीं पहुँच पाया परन्तु उसने ऐवरेस्ट से कहा मैं दोबारा आऊंगा और तुम पर विजय प्राप्त कर लूंगा क्योंकि तुम तो जैसे हो वैसे ही रहोगे परन्तु मैं अपनी शक्ति और आत्म–विश्वास में बढ़ोत्तरी करके और आगे बढ़ सकता हूँ। मुझे अपनी शक्ति पर जो परमात्मा ने दी है, उस पर पूर्ण विश्वास है।

मित्रों! याद रहे पर्वत जैसा हौंसला ही पर्वत को पार करने का कारक बनता है।

–विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 146

फुल जिवें परवाह नहीं करदा नाल खलोते ख़ारां दी।
परवाह नहीं करदे भगत हरि दे एदां दुनियादारां दी।
बोल नहीं एहदे थोथे हुन्दे दुनियां वांगूं बाझ अमल।
दुनियां दे विच एदां रहन्दा ज्यों जल विच निर्लेप कमल।
चंदन नहीं ज्यों खुशबू छडदा विच रहे चाहे बांसां दे।
रहन्दा नाल ए नाम हरि दा आउंदे जांदे स्वासां दे।
पाणी दे विच रहे मुरग़ाबी लेप नहीं होन्दा पाणी दा।
कहे अवतार नहीं लेप भगत नूं माया भरम भुलाणी दा।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जिस प्रकार फूल और कांटे साथ–साथ रहते हैं लेकिन फूल कभी साथ खड़े कांटों की परवाह नहीं करते। इसी तरह भक्त भी इस संसार में रहते हुए संसार के लोगों की कभी परवाह नहीं करते। भक्तों के बोल और कर्म हमेशा एक जैसे होते हैं, ये जैसा बोलते हैं वैसा ही कर्म भी करते हैं। ये बिना अमल वाली अर्थात् खोखली बातें नहीं करते। कमल कीचड़ में खिलता है, कीचड़ न हो तो कमल भी नहीं रह सकता। इसी तरह भक्त भी दुनिया के बीच में ऐसे रहते हैं जैसे कीचड़ में रहकर कमल सदा खिला हुआ रहता है।

चन्दन का स्वभाव है सुगन्ध फैलाना और अपने साथ रहने वालों को भी खुशबू से भर देना लेकिन बांस का स्वभाव है किसी भी प्रकार की खुशबू को अपने अन्दर ग्रहण न करना। चंदन विपरीत स्वभाव वाले बांसों के बीच रहकर भी अपनी खुशबू कभी नहीं त्यागता।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि जिस प्रकार चन्दन बांसों के बीच रहकर भी अपनी खुशबू नहीं छोड़ता, इसी तरह भक्त भी आती–जाती स्वांसों के साथ इस परमात्मा का नाम हमेशा जोड़े रखता है।

संग के प्रभाव को स्पष्ट करते हुए बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं कि मुरगाबी पानी में रहती है लेकिन उस पर पानी का असर नहीं होता। इसी तरह भक्त भी माया रूपी संसार में रहते हैं लेकिन उनके ऊपर भ्रम में डालने वाली माया कोई प्रभाव नहीं डाल पाती। इस प्रकार विभिन्न उदाहरणों द्वारा बाबा अवतार सिंह जी यही समझा रहे हैं कि हमें रहना तो इसी अच्छाई और बुराई से भरे संसार में है लेकिन भक्तों की भांति हमें केवल अच्छाई ग्रहण करना है। हमें बुराई का कोई भी प्रभाव ग्रहण नहीं करना है।

होली आ गई

बालगीत : गफूर 'स्नेही'

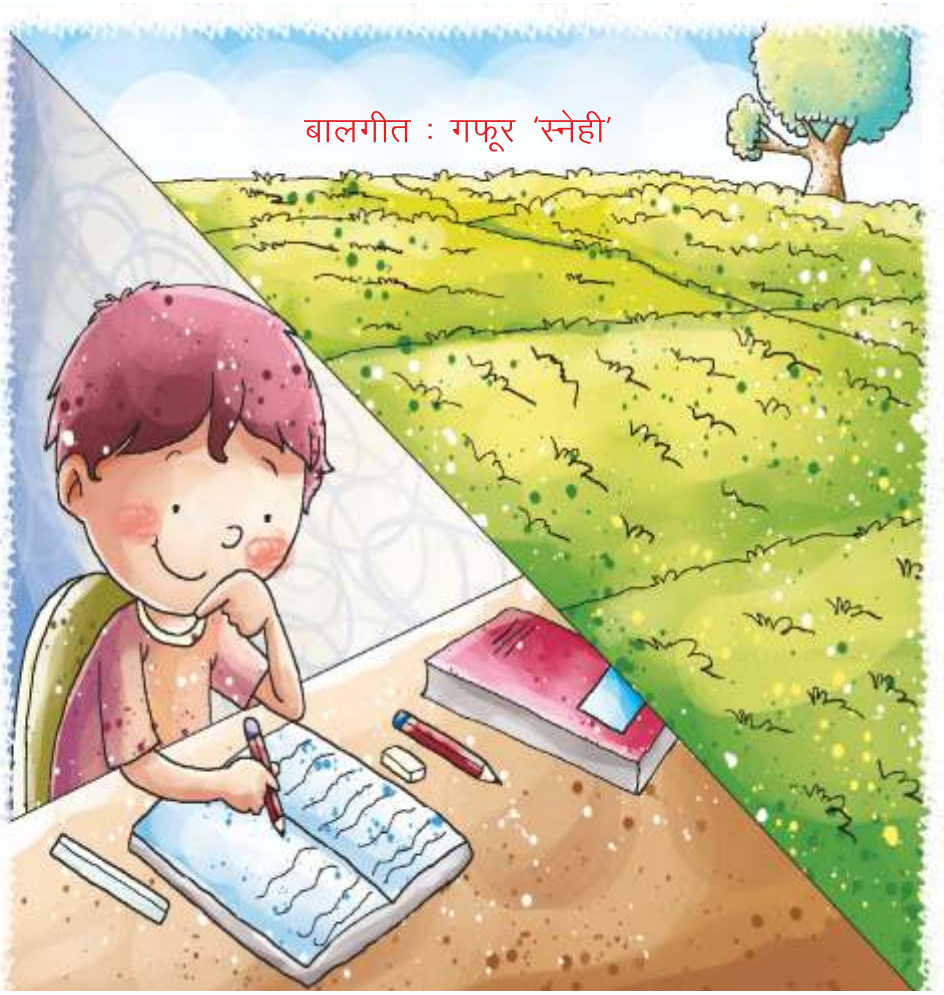

सरदी की ऋतु गई,
तो समझो होली आ गई।
यह बसंती मौसम है,
खुशियां लाई नई नई।

होली तो बस होली है,
कैसी रंग रंगोली है।
हास्य व्यंग्य से भरी हुई,
सबकी बानी बोली है।

बीचो बीच परीक्षा है,
पूरी शिक्षा दीक्षा है।
मेहनत करता पढ़ता जो,
फल उत्तम शिक्षा है।

फिर अप्रैल और मई।
सरदी की ऋतु गई।।

सात देशों का संगठन यानि SAARC सार्क

सार्क शब्द यह अंग्रेजी के (SAARC) से मिलकर बना है। इसका पूरा नाम 'साउथ एशियन एसोसियेशन फार रीजनल कोआपरेशन' है। हिन्दी में इसे 'दक्षेस' नाम से जानते हैं। जो दक्षिण एशिया के सात सदस्य देशों का संगठन है। इसमें भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव, भूटान, श्रीलंका व नेपाल हैं।

सार्क को स्थापित करने का विचार सबसे पहले बांग्लादेश के राष्ट्रपति जियाउर रहमान के दिमाग में मई सन् 1980 को आया था।

पर इसकी स्थापना 8 दिसम्बर 1985 में ढाका में हुई थी। जहाँ सात देशों के संस्थापक सदस्यों ने भाग लिया था। इसका उद्देश्य आपसी सहयोग से आगे बढ़ना, सशक्त बनना और सभी सदस्य देशों के बीच दोस्ती सम्बन्ध बढ़ाना एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक–दूसरे के हितों का ध्यान रखना एक महत्वपूर्ण अंग होता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : ऊषा सरीन (दिल्ली)

★ हमें बड़ी–बड़ी बातों के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि अच्छी बातों को ध्यान में रखकर कुछ कर दिखाना चाहिए।

★ जो बीत गया सो बीत गया, 'आज' हम कुछ अच्छा कर ले, ताकि आने वाले 'कल' की इन्तजार न रहे।

★ बीते हुए 'कल' और आने वाले 'कल' की चिन्ता न करके 'आज' ही हमें खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए।

★ हमारे आगे–पीछे अच्छा–बुरा, क्या या कौन है? यह न सोचकर हमारे अन्दर अच्छा–बुरा क्या है या हम कैसे हैं, यह सोचना है।

★ हर सुबह एक नई सुबह है। आशा की नई किरण के साथ, आज ही कुछ अच्छा कर दिखाएं और आनन्द लें।

★ सावधान और चौकन्ना रहने से जीवन में आनी वाली काफी मुश्किलों से बचा जा सकता है।

★ कोई भी व्यक्ति जो आपके व्यवहार में आए, उसे प्यार भरी खुशबू से भर देना चाहिए।

★ यदि आप कहीं कोई दोस्त ढूँढ़ने जाओगे तो आप उन्हें बहुत कम पाओगे, पर यदि आप स्वयं सबके दोस्त बन जाओगे तो आप सभी जगह दोस्त ही पाओगे।

★ अच्छे रास्ते सबको मालूम हैं, पर विरला ही कोई उस पर चल पाता है।

★ इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी है।

★ छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।

★ अगर अंधा अंधे का नेतृत्व करे तो दोनों खाई में गिरेंगे।

★ तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुप सकती, सूरज, चन्द्रमा और सत्य।

आलेख : रूपनारायण काबरा

ग्लोबल वार्मिंग

वायुमण्डल में हर साल 1 अरब 60 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा जुड़ती जा रही है। मगर इसे सोखने वाले जंगल लगातार कटते–घटते जा रहे हैं। सागर की कार्बन डाइऑक्साइड सोखने की क्षमता 43 प्रतिशत है, जो सन् 2040 तक मनुष्य द्वारा उत्पादित कार्बन डाइऑक्साइड की 25 प्रतिशत मात्रा ही सोख सकेगा। यदि ऊर्जा खपत की वर्तमान दर चलती रही तो सन् 2040 तक ऊर्जा की मांग अभी से पांच गुना अधिक बढ़ जायेगी जिससे पृथ्वी के तापक्रम में वृद्धि तो होगी ही, बाढ़ग्रस्त तटीय क्षेत्रों और मौसम में भयानक परिवर्तन होंगे। गर्मी बढ़ने से ध्रुवीय क्षेत्र में जमी बर्फ के पिघलने से हवा में मीथेन की मात्रा भी बढ़ेगी। मीथेन भी ग्रीन हाउस पैदा करने वाली गैस है।

वैज्ञानिकों का यह भी कथन है कि कार्बन के इसी जमाव ने अंतिम हिमयुग का खात्मा करने में अहम भूमिका निभाई थी। समुद्र तल में जमकर कार्बन डाइऑक्साइड के जमाव के कारण इसे सोखने की समुद्री क्षमता कम पड़ गई। इसके परिणामस्वरूप धरती पर कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा काफी बढ़ती गई और

अब स्थिति यहाँ तक आ पहुँची है कि ग्लोबल वार्मिंग ने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है। यह सच है कि कार्बन डाइऑक्साइड को धरती पर गर्मी बढ़ाने के लिये सीधे तौर पर जिम्मेदार माना जाता है।

इस कार्बन डाइऑक्साइड के बढ़ने के कारण ही 'ग्लोबल वार्मिंग' ने दुनिया के अधिकांश देशों के मौसमों को उल्टा–पुल्टा कर दिया या उसमें परिवर्तन कर दिया, जैसे बिन मौसम आंधी–तूफान आना, समय पूर्व अत्यधिक गर्मी का प्रकोप बढ़ना, सर्दियों के तापमान में निरन्तर गिरावट आना, बेमौसम स्नोफॉल होना, बारिश का अनिश्चित होना, समय पर ओस न गिरना तथा मानसूनी हवाओं का रूठना आदि। वायुमंडल में क्लोरो, फ्लोरो कार्बन पदार्थों का घनत्व पांच प्रतिशत सालाना के हिसाब से बढ़ रहा है। इनका प्रयोग रेफ्रीजरेटरों में शीतलीकरण और प्लास्टिक फोक बनाने में काम आती है। उर्वरक संयंत्रों से निकली नाइट्रस ऑक्साइड कोयला तथा पेट्रोलियम ईंधन जलने में पैदा होती है, वायुमंडल में बढ़ती जा रही है। पृथ्वी के आवरण में विद्यमान ओजोन गैस, जो सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी विकिरण को रोकती है, विमानों के उड़ने की ऊँचाइयों पर ग्रीन हाउस गैस का काम करने लगती है। ■

बाल कहानी : फारुख हुसैन

होली का रंग

बसंत ऋतु के शुरू होते ही माइटी भेड़िया और बैंडी सियार समझ गये कि होली आने वाली है, पतझड़ बीत चुका है। चारों ओर बस हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही थी। माइटी और बैडी मन ही मन बहुत खुश हो रहे थे।

इस साल उन्होंने चंपकवन के जानवरों को डराकर लूटने का प्लान बनाया। वे पड़ोस वाले गाँव से रंग उठा लाये और उसे अपने शरीर पर लगाकर सभी जानवरों को बेवकूफ बनाने लगे।

माइटी और बैंडी अपने मुंह से अजीब–अजीब तरह की आवाजें निकालते जिससे जानवर डर जाते और अपना सामान वहीं छोड़कर भाग जाते। माइटी और बैडी उनका सारा सामान उठा लेते।

सभी जानवर डर के कारण अपने घरों में ही छिपे रहते उन्होंने घर से बाहर निकलना ही बंद कर दिया था। वे बस रात

को ही बाहर निकलते। बंटी हिरन जब शहर से चंपकवन आया तो वह शहर से होली खेलने के लिये ढेर सारा रंग खरीद लाया था जिससे सभी जानवर होली खेल सकें क्योंकि चंपकवन के जानवरों ने कभी होली नहीं खेली थी। लेकिन जब बंटी चंपकवन पहुँचा तो उसे वहाँ सभी कुछ बदला–बदला नज़र आया।

''सभी लोग अपने–अपने घरों में ही क्यों छुपे रहते हैं?'' बंटी हिरन ने अपने दोस्त मंकी बंदर से पूछा।

''यहाँ दो भयानक राक्षस आ गये हैं, जिससे सभी भयभीत रहते हैं'' मंकी ने बंटी को बताया।

यह सुनकर वह सोच में पड़ गया।

''ये राक्षस कब आते हैं?'' बंटी ने मंकी से दोबारा पूछा।

वह कुछ बताता, तभी वहाँ भगदड़ मच गयी। सभी जानवर डरकर भागने लगे। तभी वहाँ वे राक्षस आ गये। लेकिन वह उन्हें देखकर चौंक गया क्योंकि वे कोई राक्षस नहीं थे बल्कि कोई जानवर थे जो रंग लगाकर सभी को बेवकूफ बना रहे थे।

अगले दिन उसने सभी को बता दिया कि कोई उन्हें बेवकूफ बना रहा है।

''लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो?'' पिंकी ऊंटनी बोली।

यह सुनकर बंटी ने अपने साथ लाया हुआ हरा–लाल रंग सभी को दिखाया।

''लेकिन हम उन्हें कैसे पकड़े?'' मंकी बोला।

उसकी बात सुनकर सब सोच में पड़ गये तभी बंटी को एक उपाय सूझ गया। उसने अपनी योजना सभी को समझा दी।

अगले दिन जब माइटी और बैंडी रंग लगाकर पहुँचे तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ उन्हें कोई जानवर नहीं दिखायी दे रहा था। अचानक उन पर तेजी से पानी गिरने लगा। उन पर लगा सारा रंग धुल गया और वे अपने असली रूप में आ गये।

माइटी और बैंडी को देखकर सभी जानवरों को बहुत गुस्सा आया सभी ने मिलकर उनकी खूब पिटाई की और उन्हें जंगल से बाहर निकाल दिया। सभी जानवरों ने बंटी हिरन को धन्यवाद दिया। फिर बंटी ने अपने साथ लाया रंग सभी जानवरों में बांट दिया। फिर उन्होंने खूब जमकर होली खेली।

याद रखने योग्य बातें

★ नाम बड़ा वह है जो अपने श्रेष्ठ कर्मों से कमाया हुआ है। माता–पिता का रखा हुआ नाम तो केवल पहचान मात्र है।

★ जो सबमें दोष ढूंढ़ता है, उसकी गुण ग्रहण करने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

★ जिसका मन पवित्र नहीं होता उसका कोई काम पवित्र नहीं होता।

★ जो समय को नष्ट करता है; समय उसे नष्ट कर देता है।

प्रस्तुति : प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

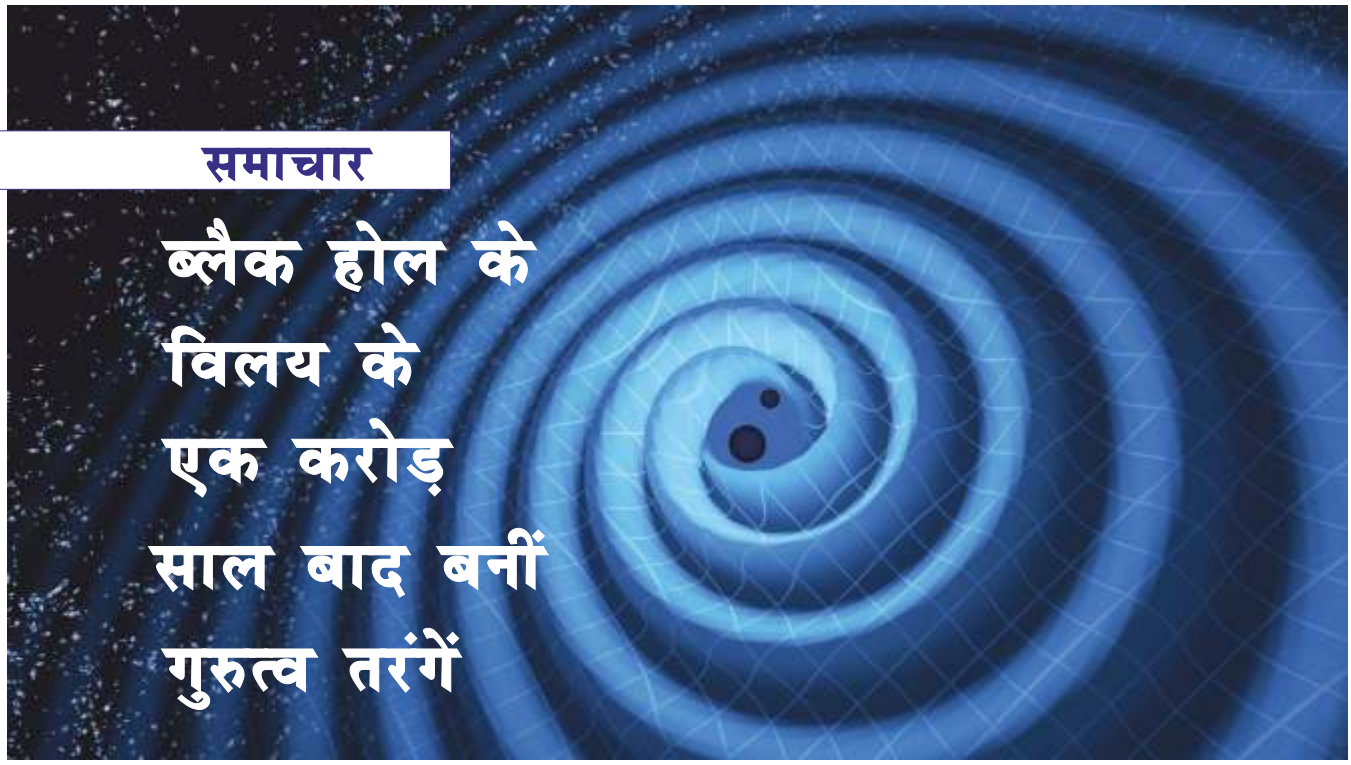

समाचार

ब्लैक होल के विलय के एक करोड़ साल बाद बनीं गुरुत्व तरंगें

जिनेवा। एक नए अध्ययन में पाया गया है कि गुरुत्वीय तरंगों का निर्माण दो तारामंडलों के टकराव और उनके केन्द्रीय ब्लैक होल के आपस में विलय के लगभग एक करोड़ साल बाद हुआ। गुरुत्वीय तरंगों का यह निर्माण अब तक सोची गई गति से लगभग 100 गुना तेज है।

सबसे पहले गुरुत्वीय तरंगों का पता इस साल की शुरुआत में चला था। एक सदी से भी पहले अल्बर्ट आइंस्टीन ने इस अवधारणा का जिक्र सापेक्षता के सामान्य सिद्धांत में कर दिया था। अब तक यह बताना संभव नहीं था कि गुरुत्वीय तरंगें किस बिंदु से पैदा होना शुरू होकर पूरे अंतरिक्ष में फैल गई।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी संस्थान के अंतरिक्ष विज्ञानियों के एक अंतर्राष्ट्रीय दल ने इसका छद्म रूपांतरण करके इसका आकलन कर लिया है। हर तारामंडल के मूल में एक व्यापक ब्लैक होल होता है, जो करोड़ों–अरबों सौर द्रव्यमानों के समतुल्य होता है। ब्रह्मांड का वास्तविक रूपांतरण करते हुए लगभग दो–तीन अरब साल पुराने तारामंडलों का विलय कराया गया। दो केन्द्रीय ब्लैक होल्स को तारामंडलों की टक्कर के बाद शक्तिशाली गुरुत्वीय तरंगों का उत्सर्जन करने के लिए जितने समय की जरूरत थी, उसका आकलन शोधकर्ताओं ने सुपर कम्प्यूटरों की मदद से किया। ज्यूरिख विश्वविद्यालय के लुसियो मेयर के अनुसार, 'दो ब्लैक होल्स के विलय के एक करोड़ साल बाद पहली गुरुत्व तरंगें पैदा हो गई थीं। यह इससे पहले तक मानी जाती रही गति से 100 गुना तेज था।' कम्प्यूटर के जरिए किए गए इस रूपांतरण का काम चीन, ज्यूरिख और हीडलबर्ग में हुआ। (भाषा)

– संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

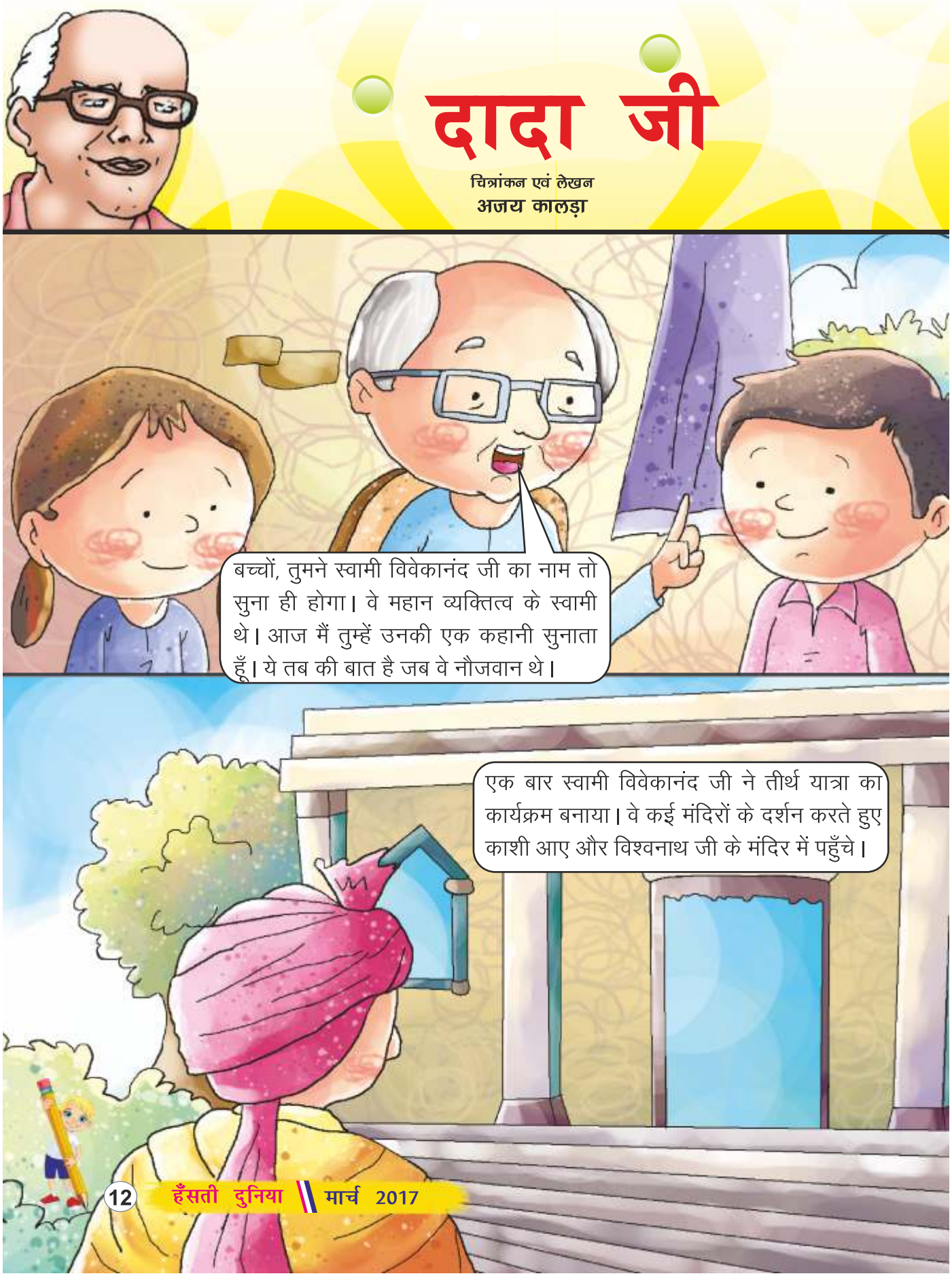
दादा जी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
बच्चों, तुमने स्वामी विवेकानंद जी का नाम तो सुना ही होगा। वे महान व्यक्तित्व के स्वामी थे। आज मैं तुम्हें उनकी एक कहानी सुनाता हूँ। ये तब की बात है जब वे नौजवान थे।
एक बार स्वामी विवेकानंद जी ने तीर्थ यात्रा का कार्यक्रम बनाया। वे कई मंदिरों के दर्शन करते हुए काशी आए और विश्वनाथ जी के मंदिर में पहुँचे।

जब वे दर्शन करके बाहर आए तो उन्होंने देखा कि कुछ बंदर इधर–से–उधर चक्कर लगा रहे हैं। स्वामी जी जैसे ही आगे बढ़े वे बंदर उनके पीछे पड़ गए।
उन दिनों स्वामी जी लम्बा अंगरखा पहना करते थे और सिर पर साफा बाँधते थे। उन्हें पढ़ाई का बहुत शौक था इसलिए वे एक झोले (थैला) में पुस्तकें रखते थे।
बंदरों को लगा कि उनके थैले में खाने की चीजें हैं। वे स्वामी जी का पीछा करने लगे। अपने पीछे बंदरों को आते देखकर स्वामी जी डर गए और तेज़ चलने लगे।

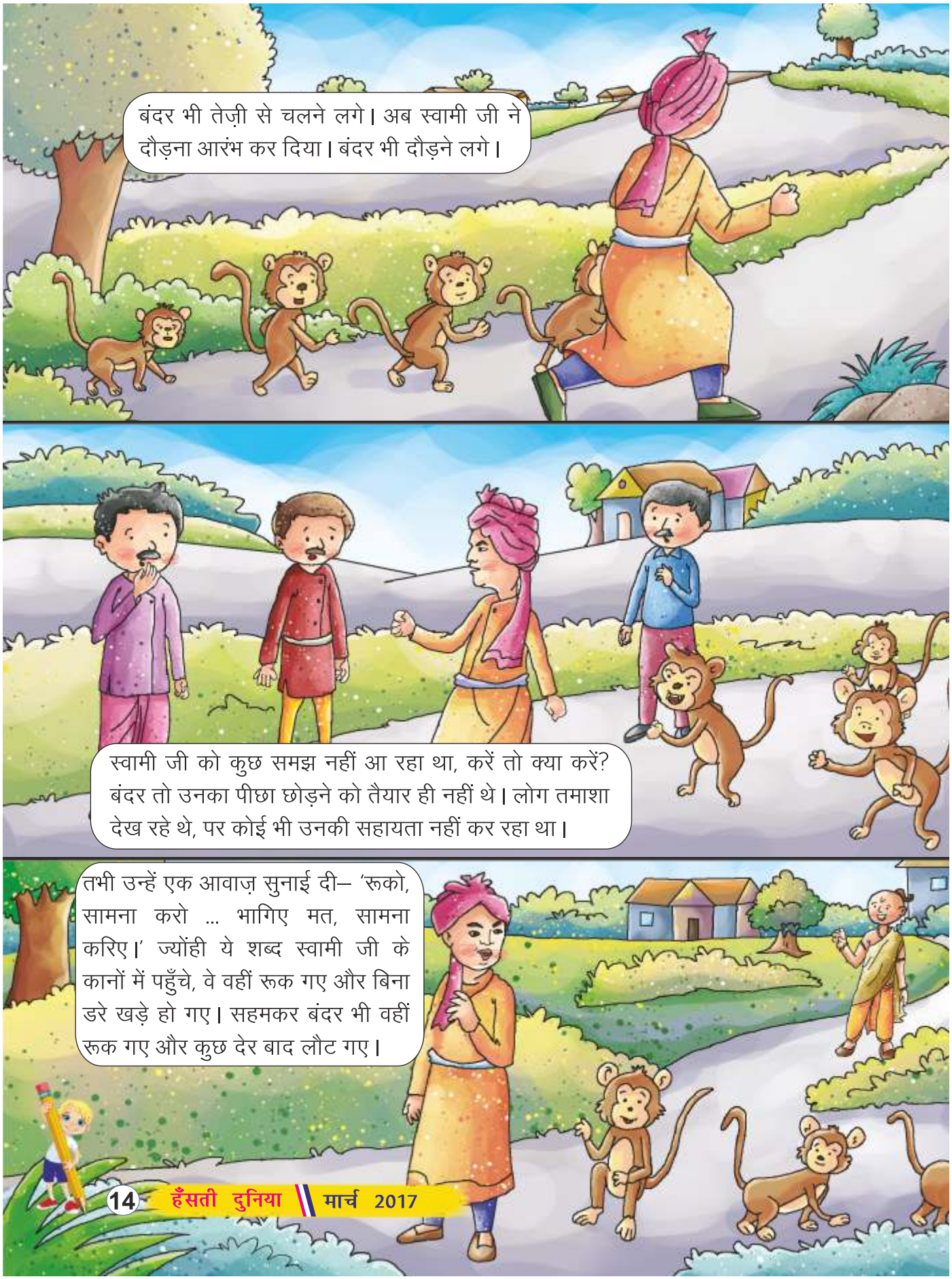
बंदर भी तेज़ी से चलने लगे। अब स्वामी जी ने दौड़ना आरंभ कर दिया। बंदर भी दौड़ने लगे।
स्वामी जी को कुछ समझ नहीं आ रहा था, करें तो क्या करें? बंदर तो उनका पीछा छोड़ने को तैयार ही नहीं थे। लोग तमाशा देख रहे थे, पर कोई भी उनकी सहायता नहीं कर रहा था।
तभी उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी– 'रूको, सामना करो ... भागिए मत, सामना करिए।' ज्योंही ये शब्द स्वामी जी के कानों में पहुँचे, वे वहीं रूक गए और बिना डरे खड़े हो गए। सहमकर बंदर भी वहीं रूक गए और कुछ देर बाद लौट गए।

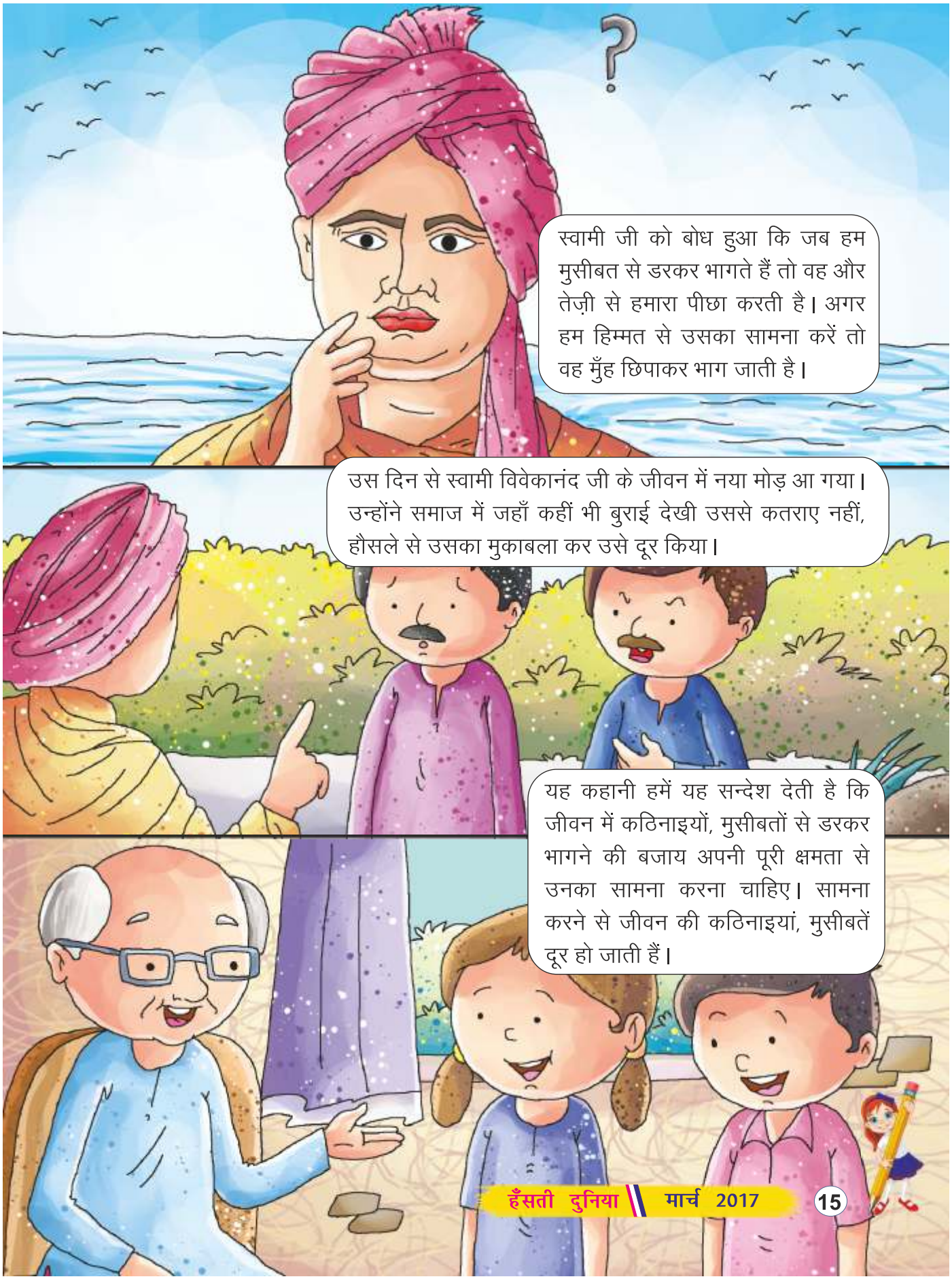
स्वामी जी को बोध हुआ कि जब हम मुसीबत से डरकर भागते हैं तो वह और तेज़ी से हमारा पीछा करती है। अगर हम हिम्मत से उसका सामना करें तो वह मुँह छिपाकर भाग जाती है।
उस दिन से स्वामी विवेकानंद जी के जीवन में नया मोड़ आ गया। उन्होंने समाज में जहाँ कहीं भी बुराई देखी उससे कतराए नहीं, हौसले से उसका मुकाबला कर उसे दूर किया।
यह कहानी हमें यह सन्देश देती है कि जीवन में कठिनाइयों, मुसीबतों से डरकर भागने की बजाय अपनी पूरी क्षमता से उनका सामना करना चाहिए। सामना करने से जीवन की कठिनाइयां, मुसीबतें दूर हो जाती हैं।

विज्ञान लेख : कमल सोगानी

अब पेड़ पर भी पैदा होगी बिजली ...

पेड़ पौधों से हमें शुद्ध वायु के अतिरिक्त फल–फूल भी प्राप्त होते हैं, लेकिन अब आपको जानकर अचरज होगा इन्हीं पेड़–पौधों से बिजली भी मिलेगी।

हाँ, अब वो दिन दूर नहीं जब बिजली पेड़ों पर पैदा की जाएगी। इस परिकल्पना को साकार करने के लिए फिलहाल फ्रांसीसी इंजीनियरों ने एक कृत्रिम पेड़ विकसित किया है। यह पेड़ हवा के उपयोग से बिजली पैदा करता है।

इस 'विंड ट्री' को फ्रांसीसी वैज्ञानिकों की टीम ने तैयार किया है। इस संदर्भ में वैज्ञानिकों का कथन है– इस पेड़ को बनाने का ख्याल मस्तिष्क में तब आया, जब उन्होंने हवा न चलने के बावजूद पत्तियों को हिलते देखा।

दरअसल इस पेड़ की पत्तियों में इस तरह के छोटे–छोटे ब्लेड लगाए गए हैं, जो हवाओं को अंदर की तरफ मोड़ते हैं। यानी यह 'विंड ट्री' हवा के बहाव से बिजली पैदा करता है।

वैज्ञानिकों की टीम ने तीन साल के शोध के उपरांत 26 फीट ऊँचा प्रोटो टाइप पेड़ विकसित किया है। इसे उत्तर–पश्चिम फ्रांस के ब्रिटनी शहर के 'प्लूमर बोदोयू कम्यून' में लगाया गया है।

यह पेड़ एक पारम्परिक 'विंड टरबाइन' से ज्यादा बिजली पैदा कर सकता है। क्योंकि यह सिर्फ 4.5 मील प्रति घंटे की रफ्तार वाली हवाओं से भी बिजली पैदा कर सकता है।

वैज्ञानिकों का एक कथन यह भी है– पहाड़ी क्षेत्रों में उगे ऊँचे–ऊँचे पेड़ों के पत्तों में आसमानी तड़ित की चमक समा जाती है, जो कई घंटों तक रहती है। कुदरत की इस चमक को हासिल करने के लिए वैज्ञानिक विशेष किस्म के उपकरण बनाने में जुटे हुए हैं।

विश्व के कई घने जंगलों में ऐसे पेड़ भी मौजूद हैं, जो रात्रि में अपने पत्तों से प्रकाश की किरणें उत्पन्न करते हैं। आखिर इनमें प्रकाश की किरणें पैदा करने की शक्ति कहाँ से आती है? यह एक रहस्य का विषय है। वैज्ञानिक इन पेड़ों की सूक्ष्म जांच पड़ताल कर रहे हैं, ताकि कम खर्च में अधिक से अधिक बिजली पैदा की जा सके।

बालगीत : घमंडीलाल अग्रवाल

रहना धुन के पक्के

उड़ता हुआ मोर मस्ती में,
बात कह गया यह बस्ती में,
फूलों जैसे कोमल बच्चों–
रहना धुन के पक्के।

जो सोचा वह कर दिखलाना
पीछे ज़रा न हटना,
बाधाएं निज मुंह की खाएं।
पथ में हरदम डटना।

सुख आ जाएं, दुःख भग जाएं–
ऐसे मारो छक्के।

सद्भावों को खुला खजाना
वसुधा पर बिखरा दो,
अपनी बांहों की ताकत तुम
दुनिया को दिखला दो।

लिखो प्रीति की नई कहानी–
लोग रहें भौचक्के।

व्यर्थ घूमना घातक होता
मस्त रहो अपने में,

नई ऊंचाई छूने ख़ातिर
रंग भरो सपने में,
करो सदा उपयोग समय का–
खाओ कभी न धक्के।

लघु कथा : किशोर डैनियल

जैसी संगति वैसा रंग

एक जंगल में एक शेरनी रहती थी। उसका प्रसवकाल निकट था। एक बार वह शिकार की खोज में जंगल से बाहर निकली। उसने दूर भेड़ों के एक झुण्ड को चरते देखा। उसने दौड़कर भेड़ों के झुण्ड पर छलांग मारी। परन्तु दैवयोग से वह दुर्घटनाग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो गई। मरते–मरते उसने एक शावक को जन्म दिया। वह सिंह शावक भी भेड़ों के साथ रहने लगा और भेड़ों का ही दूध पीकर पलने लगा। वह उसी तरह रहने लगा जैसे भेड़ें रहती हैं। वह भेड़ों की सी बोली बोलने लगा। कुछ समय बाद वह शक्तिशाली एवं पूर्ण विकसित सिंह हो गया, फिर भी वह अपने आपको भेड़ ही समझता था।

दिन बीतते गये। एक दिन अचानक एक सिंह शिकार के लिए उधर आ निकला। उसने देखा कि भेड़ों के झुण्ड में एक सिंह भी है। वह भी भेड़ों की भांति डरकर भागा जा रहा है। तब वह सिंह उसकी ओर यह समझाने के लिए बढ़ा कि तू सिंह है, भेड़ नहीं। पर ज्योंही वह आगे बढ़ा, त्योंही भेड़ों का झुण्ड भागा और उसके साथ–साथ वह भेड़सिंह भी भागा। वह जंगली शेर दौड़कर उसके पास पहुँचा और बोला– अरे तू भेड़ों के साथ रहकर अपनी वास्तविकता और अपना स्वभाव तथा अपनी पहचान भूल गया है। तू भेड़ नहीं है वास्तव में तू तो सिंह है मेरी तरह।

भेड़सिंह बोला– तुम झूठ बोल रहे हो। मैं तो भेड़ हूँ, सिंह कैसे हो सकता हूँ? मैं तो भेड़ों में ही पला बढ़ा हूँ और भेड़ की ही सन्तान हूँ।

जानकारी : किरण बाला

माचिस की कहानी

माचिस एक ऐसी चीज है जिसका इस्तेमाल हर घर परिवार में होता है। जो वस्तु इतनी उपयोगी है, उसके बारे में कितना कुछ जानते हैं आप? आइए, इससे जुड़ी कुछ रोचक–रोमांचक जानकारी देखें।

माचिस की दो किस्में हैं– घर्षण माचिस और सुरक्षित माचिस।

घर्षण माचिस वह है जिसे किसी भी खुरदरे तल पर रगड़ने से आग पैदा हो जाती है। इसे बनाने में गंधक, मोम, फास्फोरस ट्राइसल्फाइड, एन्टीमनी ट्राइसल्फाइड, पोटाशियम क्लोरेट, कांच तथा बालू का इस्तेमाल किया जाता है। इसमें लगभग 8 सेन्टीमीटर लम्बी तथा 0.3 सेन्टीमीटर व्यास वाली लकड़ी की तीली होती है। ये तीलियां जरा सी रगड़ से आग पकड़ लेती हैं, इसलिए इनका प्रयोग सुरक्षित नहीं माना जाता है। इसके एक सिरे का रंग लाल और सफेद या नीला और सफेद होता है।

सुरक्षित माचिस में फास्फोरस ट्राइसल्फाइड के स्थान पर लाल फास्फोरस प्रयोग में लाया जाता है। ये तीलियां स्वयं आग नहीं पकड़ती अपितु खोल पर लगे विशेष रसायन की रगड़ से ही जलती हैं। इसलिए इन्हें सुरक्षित समझा जाता है।

जहाँ तक सबसे पहले माचिस बनाने का प्रश्न है, उसका श्रेय अंग्रेज फार्मासिस्ट जॉन वॉकर को है। उन्होंने सन् 1827 में इसे बनाया था। लेकिन सबसे पहली सुरक्षित माचिस बनाने का श्रेय स्वीडन के गुस्ताफ पाश्च को है जिन्होंने सन् 1844 में इसे बनाया।

भारत में स्वदेशी माचिस का उत्पादन तमिलनाडु के शिवकाशी में नाडार बंधुओं ने कालेश्वरी मैच फैक्ट्री लगाकर किया था।

माचिस केवल आग जलाने के काम ही नहीं आती अपितु इसके माध्यम से संदेश भी जारी किए जाते हैं। विमको कंपनी ने 1980 में रामायण पर माचिसों की शृंखला निकाली थी जिसमें रामायण से जुड़े कई प्रसंग शामिल थे। माचिसों पर विज्ञापन भी प्रकाशित किए जाते थे।

→

सिंह बोला– तुम भेड़ की नहीं, सिंह की सन्तान हो। तुम वास्तव में सिंह ही हो इसकी पहचान तुम्हें अभी कराता हूँ, तुम चलो मेरे साथ।

तब जंगली सिंह, भेड़सिंह को एक सरोवर के किनारे ले गया और बोला– यह देख अपना प्रतिबिम्ब और यह देख मेरा प्रतिबिम्ब। बिल्कुल एक–सा है।

भेड़सिंह अपनी और जंगली सिंह की परछाईयों की तुलना करने लगा। वह एक बार जंगली सिंह के और एक बार अपने प्रतिबिम्ब को ध्यान से देखने लगा। दोनों की शक्लें एक जैसी ही थी। उसे जंगली सिंह की बात सच प्रतीत होने लगी।

तभी जंगली सिंह ने गर्जना की तो भेड़सिंह भी जोश में आकर गर्जना करने लगा। और अपनी वास्तविकता को पहचान गया।

आओ हम भी अपनी वास्तविकता को पहचानें। हम प्रभु–परमात्मा की सन्तान हैं। हम इसको जानें। इसकी शक्ति का अनुभव करें और अपने आपको शक्तिशाली बनायें।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

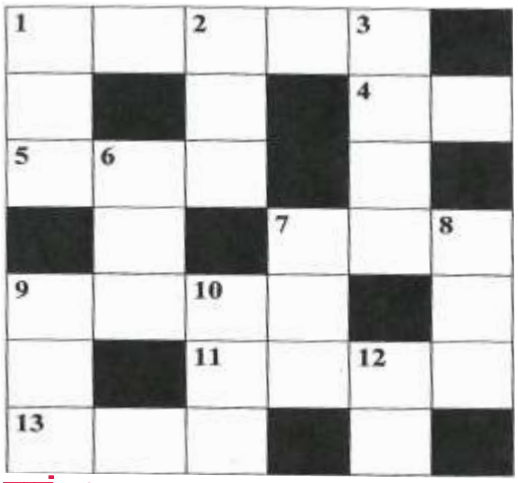

बाएं से दाएं →

1. जबलपुर और इंदौर शहर जिस भारतीय राज्य में हैं।
4. अपना का एक पर्यायवाची शब्द।
5. सन्धि कीजिये : सदा + एव।
7. पूरी तरह से भारत में बने पहले सुपर कम्प्यूटर का नाम।
9. यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक जो प्लूटो के गुरु थे।
11. किस महीने की 26 तारीख को गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता है?
13. बेमेल शब्द छांटिए : मालिन, लंदन, सियोल, कोलम्बो।

ऊपर से नीचे ↓

1. तमिलनाडु की राजधानी का पुराना नाम।
2. शुद्ध शब्द छांटिए : प्रभाव / पर्भाव।
3. परसों बुधवार था, कल .... होगा।
6. जो प्रतिदिन होता है।
7. उत्थान का विपरीत शब्द।
8. बंदर को नचाकर पालन–पोषण करने वाला।
9. भगवान श्रीकृष्ण के बचपन का एक मित्र।
10. राजा का एक पर्यायवाची शब्द।
12. जब चतुर्भुज की चारों भुजाएं बराबर हों और प्रत्येक कोण 90 डिग्री का हो तो वह आकृति .... कहलाती है।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

Form - IV
(See Rule - 8)

1. Place of Publication :
   Sant Nirankari Satsang Bhawan,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi-110009
2. Periodicity of Publication :
   Monthly
3. Printer's Name :
   Radhey Shyam
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   Plot No. 102, North Avenue,
   New Delhi-110001
4. Publisher's Name :
   Radhey Shyam
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   Plot No. 102, North Avenue,
   New Delhi- 110001
5. Editor's Name :
   Vimlesh Ahuja
   (whether citizen of India)
   Yes, Indian
   Address :
   H.No. 1/43,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009
6. Name and Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.
   Sant Nirankari Mandal,
   Sant Nirankari Colony,
   Delhi - 110009

I, Radhey Shyam, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 1.3.2017

Radhey Shyam
Publisher

लेख (जानकारी) : डॉ. परशुराम शुक्ल

आन्ध्र प्रदेश, पंजाब और हरियाणा का राजकीय पशु :

कृष्णमृग भारत का सर्वाधिक सुन्दर गवय (एन्टीलोप) है और केवल भारत व पाकिस्तान में पाया जाता है। भारत में यह उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, पंजाब, उड़ीसा, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा आन्ध्र प्रदेश के कम घने जंगलों एवं छोटी घास के मैदानों में देखने को मिलता है। कृष्णमृग राजस्थान के रेगिस्तानी मैदानों एवं उन जंगलों में भी पर्याप्त मात्रा में रहता है, जहाँ शेरों का निवास होता है, किन्तु यह पर्वतीय क्षेत्रों, दलदल वाले भागों, नदियों एवं झीलों के किनारे तथा घने जंगलों में नहीं पाया जाता। अठारहवीं सदी के आरम्भ में यह पूरे भारत में फैला हुआ था एवं इसकी संख्या लाखों में थी, किन्तु अब भारत में दस हजार से भी कम कृष्णमृग शेष बचे हैं।

विश्व के सभी वन्य जीवों में चीता सबसे तेज दौड़ता है। इसकी गति 100 से 112 किलोमीटर प्रतिघंटा समझी जाती है, जबकि कृष्णमृग 90 से 100 किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से भाग सकता है। जिस समय कृष्णमृग पूरी गति से भाग रहा हो, उस समय इसे चीते के अतिरिक्त और कोई वन्य जीव नहीं पकड़ सकता। युवा कृष्णमृग चौकड़ी भरते हुए भागता है। यह एक के बाद दूसरी, फिर तीसरी और फिर चौथी चौकड़ी एक साथ भर सकता है। इसकी एक–एक चौकड़ी 5–6 मीटर लम्बी होती है। समतल मैदानी भागों में कृष्णमृग का चौकड़ी भरते हुए भागने का दृश्य बड़ा मनोहारी होता है। इस समय इसे देखने से ऐसा लगता है मानो यह हवा में उड़ रहा हो या स्प्रिंग की सहायता से छलांगें लगा रहा हो।

मुगलकाल में कृष्णमृग का उपयोग चीते के शिकार के लिये किया जाता था। इसके लिये सर्वप्रथम कृष्णमृग को प्रशिक्षित किया जाता था और फिर उसे ऐसे क्षेत्र में छोड़ दिया जाता था, जहाँ चीतों की सम्भावना होती थी। चीता कृष्णमृग को देखते ही उसका पीछा करता था। कृष्णमृग एक निश्चित मार्ग से भागता हुआ ऐसे स्थान से गुजरता था, जहाँ किसी मचान पर शिकारी हाथों में बन्दूक लिये हुए तैयार बैठा रहता था। कृष्णमृग तो मचान के सामने से छलांगें मारता हुआ

निकल जाता था, किन्तु चीता शिकारी की गोली का निशाना बन जाता था।

कृष्णमृग शाकाहारी वन्यजीवों में विश्व का सबसे तेज गति से दौड़ने वाला वन्य जीव है और अब भारतीय चीते के विलुप्त हो जाने के बाद भारत के सभी मांसाहारी एवं शाकाहारी जीवों में सर्वाधिक तेज गति से दौड़ने वाला वन्य जीव बन गया है।

कृष्णमृग को लोग सामान्यतया मृग अर्थात हिरन समझते हैं, किन्तु यह हिरन नहीं है। यह एक गवय (एन्टीलोप) है। भारत में इसके अतिरिक्त तीन और भी गवय पाये जाते हैं। ये हैं– चौसिंगा, चिंकारा और नीलगाय। इनके सींग हिरनों के समान प्रतिवर्ष झड़ते नहीं हैं, जबकि सांभर, चीतल, हंगुल आदि सभी हिरनों के मृगशृंग (एन्टलर्स) प्रतिवर्ष गिर जाते हैं और फिर नये मृगशृंग निकल आते हैं।

कृष्णमृग अपनी तरह के अन्य प्राणियों की तुलना में सर्वाधिक सुन्दर वन्य प्राणी है। अफ्रीका में हिरन और गवय की सबसे अधिक प्रजातियां पायी जाती हैं, किन्तु उनमें एक भी कृष्णमृग के समान सुन्दर नहीं होती। कृष्णमृग एकमात्र ऐसा गवय है, जिसमें नर और मादा का रंग अलग–अलग होता है। नर कृष्णमृग की गर्दन, सर, पीठ और पैरों का रंग गहरा भूरा अथवा काला होता है। इसका पेट एवं पैरों के भीतर का भाग सफेद होता है। कृष्णमृग की त्वचा पर छोटे–छोटे बाल होते हैं तथा दोनों आँखों के चारों ओर सफेद रंग का एक घेरा होता है। इसकी लम्बाई 75 सेन्टीमीटर से 85 सेन्टीमीटर तक, ऊँचाई 60 सेन्टीमीटर से 70 सेन्टीमीटर तक एवं वजन लगभग 40 किलोग्राम होता है। इसकी पूँछ बहुत छोटी, लगभग 15 सेन्टीमीटर होती है। दक्षिण भारत के कृष्णमृग का रंग प्रायः गहरा भूरा होता है।

मादा कृष्णमृग का आकार नर से छोटा होता है। इसकी लम्बाई 70 सेन्टीमीटर से लेकर 80 सेन्टीमीटर तक, कंधों तक की ऊँचाई 55 से 60 सेन्टीमीटर तक और वजन 30 किलोग्राम से 35 किलोग्राम के मध्य होता है। मादा कृष्णमृग का शरीर पीलापन लिये हुए रेतीले हल्के भूरे रंग का होता है। आरम्भ में नर और मादा के शरीर का रंग एक जैसा होता है, किन्तु तीन वर्ष की आयु के बाद नर के शरीर का रंग बदलना आरम्भ हो जाता है और जैसे–जैसे उसकी आयु बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उसके शरीर का रंग गहरा होता जाता है। वृद्ध कृष्णमृग का शरीर सर्वाधिक गहरा भूरा अथवा काला होता है।

कृष्णमृग की सुन्दरता का आधार हैं इसके सींग। इसमें केवल नर कृष्णमृग के सींग होते हैं, जिनकी लम्बाई 45 से 55 सेन्टीमीटर तक होती है। दक्षिण भारत में पाये जाने वाले कृष्णमृगों के सींग अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। कृष्णमृग के सींग लम्बे, नुकीले और सीधे होते हैं तथा दूर से देखने पर अंग्रेजी के अक्षर 'वी' के समान मालूम पड़ते हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये चिकने न होकर पेंच के समान ऐंठे हुए होते हैं एवं इनमें चार–चार घुमावदार मोड़ होते हैं। कुछ कृष्णमृगों के सींगों में पांच मोड़ होते हैं, किन्तु ऐसा बहुत कम होता है। सामान्यतया मादा कृष्णमृग के सींग नहीं

होते, किन्तु कभी–कभी छोटे–छोटे सींगों वाली मादाएं भी देखने को मिल जाती हैं।

कृष्णमृग की श्रवण शक्ति एवं घ्राण शक्ति सामान्य होती है, किन्तु दृष्टि बहुत तेज होती है। यह लम्बी दूरी तय करने वाला विश्व का सबसे तेज गवय है और पांच–छः मीटर चौड़ी खाईयां बड़ी सरलता से फांद जाता है। यही कारण है कि शेर तक इसका शिकार नहीं कर पाता।

कृष्णमृग सामान्यतया 30–40 के झुण्ड में रहने वाला वन्य प्राणी है। एक समय था जब यह हजारों के झुण्ड में रहता था। आज भी कभी–कभी शिवपुरी (म.प्र.) जिले के करैरा सोनचिरैया अभयारण्य में इसके दो सौ से तीन सौ तक के झुण्ड देखने को मिल जाते हैं। कृष्णमृग के प्रत्येक झुण्ड में एक वृद्ध नर, अनेक युवा नर तथा मादाएं व छोटे–छोटे बच्चे होते हैं।

कृष्णमृग एक शाकाहारी प्राणी है। यह जुगाली करता है। कृष्णमृग भोजन को बिना चबाये पहले निगल जाता है और बाद में उसे मुँह में उगलकर धीरे–धीरे चबाता है। यह घास–फूस, फल–फूल, खेजड़ी, बिलायती बबूल की फलियां, छोटे–छोटे पौधों की पत्तियां, झाड़ियां तथा आसपास की फसलें आदि बड़े चाव से खाता है। गेंहू और चने के खेत इसे विशेष रूप से पसन्द हैं। यही कारण है कि किसान इसे अपना शत्रु समझते हैं। कृष्णमृग प्रातःकाल झुण्ड बनाकर भोजन की खोज में निकलता है और दोपहर होने के पूर्व किसी छायादार झाड़ी अथवा ऐसे स्थान पर वापस आ जाता है, जहाँ यह शाम तक आराम कर सके। शाम होने पर यह पुनः भोजन की तलाश में निकलता है और अंधेरा होने से पहले तक घास–फूस आदि खाता रहता है।

एक समय था जब भारत में कृष्णमृगों की संख्या लाखों में थी, किन्तु सुन्दर सींगों, त्वचा और मांस के लिये इनका इतना अधिक शिकार किया गया कि अब इनकी संख्या कुछ हजारों में ही बची है। भारत में कृष्णमृग की घटती हुई संख्या को देखते हुए इसका नाम दुर्लभ प्राणियों की पुस्तक 'रेड डाटा बुक' में सम्मिलित कर लिया गया है और इसे बचाने के लिये विशेष प्रयास आरम्भ कर दिये गये हैं। कृष्णमृग की संख्या मे ंवृद्धि के लिये राजस्थान के गजनेर अभयारण्य, तालछापर अभयारण्य एवं मध्य प्रदेश के कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, घाटी गाँव क्षेत्र सोनचिरैया अभयारण्य करैरा (शिवपुरी, म.प्र.) को उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। इन सभी स्थानों पर इसकी संख्या बढ़ी है, किन्तु इन स्थानों को छोड़कर अन्य सभी स्थानों पर कृष्णमृग की संख्या निरन्तर गिर रही है।

कृष्णमृग भारतीय वन्य जीवन का गौरव है। इसे बचाने के लिये अतिविशिष्ट प्रयास आवश्यक हैं। 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन नेचुरल हिस्ट्री' के अनुसार सन् 1940 में भारत में अस्सी हजार से अधिक कृष्णमृग थे, किन्तु आजादी के बाद इनका इतनी तेजी से शिकार किया गया कि सन् 1964 तक इनकी संख्या घटकर आठ हजार से भी कम रह गयी है।

पहेलियां

प्रस्तुति :
–सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

1. आँखें दो हों चाहे चार,
मेरे बिना कोट बेकार।
घुसा आँख में मेरे धागा,
दर्जी के घर से मैं भागा।।

2. घेरदार है लहंगा उसका,
एक टांग पर रहे खड़ी।
करते चाह सभी उसकी,
वर्षा हो या धूप कड़ी।।

3. नीचे पटको ऊपर जाऊँ,
ऊपर से फिर नीचे आऊँ।
आऊँ–जाऊँ, आऊँ–जाऊँ,
जितना चाहो खेल खिलाऊँ।।

4. पंख हैं लेकिन चिड़िया नहीं,
चलता है लेकिन बढ़ता नहीं।
गर्मी भगाना इसका काम,
झट बतलाओ क्या है नाम।।

5. लाल पूँछ हरी बिलाई,
इसका बनता हलुआ भाई।

6. पैरों में जंजीर लगी है,
फिर भी दौड़ लगाये।
पगडंडी पर चले झूम के,
गाँव–गाँव पहुँचाये।।

7. हम दोनों हैं पक्के मित्र,
कर सकते हैं काम विचित्र।
पाँच–पाँच हैं नौकर साथ,
नहीं छोड़ते अपना साथ।।

8. एक लाठी की सुनो कहानी,
इसमें छिपा है मीठा पानी।

(वर्ग पहेली के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कविता : किशोर 'स्वर्ण'

प्यार ही सिखाती होली

हो ली सो हो ली,
अब तो बोलो प्यार की बोली।
प्यार से सब अपने बनते,
प्यार ही सिखाती है होली।।

प्यार ही सिखाती होली,
अब सबसे हो प्यार ही प्यार।
दिल में हो प्रेम–प्यार,
न हो किसी से भी तकरार।।

रंग प्यार के बरसाये हम,
'स्वर्ण' सजाये हम रंगोली।
अब तो बोलो प्यार की बोली,
हो ली सो हो ली।।

बाल कविता : राजेन्द्र निशेश

सबको गले लगाती

ढोल मजीरा खूब बजाती,
धूम मचाती होली आई।
होली का हुड़दंग मचाती,
मस्तानों की टोली आई।।

नीले, पीले, हरे, गुलाबी,
सब रंगों की झोली लाई।
सब को गले लगाती जाती,
मीठी मीठी बोली भाई।।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

पारूल की तरकीब

चंपकवन वन में रहने वाला चीकू खरगोश और पास ही बहने वाली नदी में रहने वाली पारूल मछली आपस में गहरे दोस्त थे। दोनों बुद्धिमान थे। अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर ही कई बार जंगल के जानवरों को उन्होंने मुसीबत से बचाया था। चीकू नदी के किनारे बैठकर पारूल से बातें करता। जानवरों की मदद में ही उनका समय बीतता।

एक धूर्त लोमड़ कहीं से आकर उस जंगल के जानवरों को परेशान करने लगा। वह हमेशा चुपके से किसी जानवर को मारकर खा जाता।

एक दिन चीकू खरगोश अपने खेत में बैठा मुलायम–मुलायम गाजरें खा रहा था। अचानक किसी आवाज को सुनकर वह चौंक पड़ा। उसने पीछे मुड़कर देखा तो मोनू लोमड़ खड़ा था। उसका इरादा नेक नहीं लग रहा था। पहले तो अपने आपको अकेला समझकर चीकू घबरा गया। फिर वह तेजी से खेत से भागने लगा। उसके पीछे सोनू लोमड़ भी तेजी से दौड़ा।

वे दोनों खेतों, झाड़ियों, रेतीले मैदानों और तालाब के किनारे भागते रहे। लेकिन सोनू चीकू को पकड़ने में सफल नहीं हो सका।

कुछ समय बाद वह नदी के किनारे आया। उसने चारों ओर निगाहें दौड़ाई, वहाँ सोनू लोमड़ नहीं था। उसे बहुत प्यास लगी थी। इसलिए वह नदी के किनारे जाकर पानी पीने लगा। तभी नदी में रहने वाली उसकी दोस्त पारूल मछली दिखाई दी। पारूल ने चीकू का स्वागत किया। वे आपस में बातें करने लगे। तभी सोनू लोमड़ की परछाई पानी में दिखाई दी।

पारूल और चीकू ने तब तक लोमड़ से पीछा छुड़ाने की तरकीब सोच ली थी। उसने जोर से पारूल मछली से कहा– ''पारूल बहन, मेरे बच्चे मोनू खरगोश की शादी के लिए मुझे ढेर सारा धन चाहिए। बताओ मुझे धन कहाँ मिलेगा?''

सोनू आश्चर्य में पड़ गया। वह ध्यान से सुनने लगा कि पारूल क्या जवाब देती है।

पारूल ने कहा– ''क्या तुम उस नीम के पेड़ को देख रहे हो?'' उसने सामने की ओर कुछ दूर एक पेड़ की ओर इशारा किया।

''हाँ, हाँ!'' चीकू ने जवाब दिया।

''उस पेड़ में एक बहुत बड़ा सुराख है। अगर तुम उसके अन्दर जाओ तो तुम्हें एक लम्बी सुरंग मिलेगी। उसके बाद एक गुफा मिलेगी। जिसमें

एक आसन पर 'वनराजा' की बड़ी–सी मूर्ति है। उस मूर्ति के दाहिने हाथ में एक शंख है। उसे तुम ले लो। तुम उससे, जो वस्तु चाहो मांग सकते हो। वह तुम्हारी सभी इच्छाएं पूरी करेगा।''

सोनू दोनों की बातें बड़े ध्यान से सुन रहा था। वह सीधे नीम के पेड़ की ओर दौड़ा। लालची लोमड़ मनोकामना पूर्ण करने वाले शंख के चक्कर में चीकू को भूल गया।

पारूल मछली ने चीकू खरगोश को कुछ समझाया। चीकू ने सोनू का पीछा किया।

सोनू नीम के पेड़ के पास पहुँचा। उसमें सचमुच एक बड़ा–सा सुराख था। वह उसके अन्दर घुस गया। चीकू ने एक बड़े पत्थर को, जो पास ही पड़ा था, उसको लुढ़काकर पेड़ के सुराख का मुँह बंद कर दिया।

''अब लोमड़ आसानी से बाहर नहीं निकल सकेगा और पेड़ के अन्दर ही दम घुटने से समाप्त हो जाएगा।'' उसने सोचा।

चीकू इस बात से बहुत खुश था कि पारूल मछली ने एक मनगढ़न्त गुफा, सुरंग और मनोकामना पूर्ण करने वाले शंख की कहानी सुनाकर दुष्ट सोनू लोमड़ से हमेशा के लिए छुटकारा दिला दिया था।

जीव जगत : वैदेही शर्मा

नन्हा विचित्रा जानवर ट्री स्लॉथ

बच्चो, तुमने चिड़ियाघर में देश–विदेश के बहुत से जीव–जन्तु देखें होंगे लेकिन दक्षिण अमेरिका के घने जंगलों में पेड़ों पर रहने वाला स्लॉथ जानवर कभी नहीं देखा होगा। पेड़ों पर रहने के कारण इस छोटे जानवर को 'ट्री स्लॉथ' कहा जाता है।

स्लॉथ इतना आलसी होता है कि पेड़ों पर एक सप्ताह तक सोता रहता है। बारिश के दिनों में स्लॉथ के शरीर पर काई जम जाती है। तब पेड़ की ऊँची शाखा पर चिपककर सोते स्लॉथ का कुछ पता नहीं चलता। काई के कारण स्लॉथ का रंग पेड़ की शाखा से मिल जाता है।

दक्षिण अमेरिका के घने जंगलों में जहाँ एक महीने तक बारिश होती रहती है। स्लॉथ पेड़ों पर चढ़े सोते रहते हैं। स्लॉथ पेड़ों से रात के समय ही कभी–कभी उतरते हैं और कंदमूल खाकर फिर पेड़ पर चढ़ जाता है। स्लॉथ एक बार में इतना खा लेता है कि फिर उसको पेड़ से एक सप्ताह तक उतरना नहीं पड़ता।

स्लॉथ जमीन पर ज्यादा चल नहीं सकता। स्लॉथ घिसटता हुआ चलता है लेकिन जमीन पर कोई खतरा देखकर स्लॉथ पानी से भरे किसी गड्ढे में कूद जाता है। स्लॉथ पानी में बहुत देर तक तैरता रहता है। यही नहीं, डुबकी लगाकर बहुत देर तक पानी में छिपा रहता है।

अपनी चारों टांगों से पेड़ की ऊँची शाखा पर चिपका स्लॉथ दिनभर सोता रहता है। स्लॉथ किसी भालू के छोटे बच्चे की तरह दिखाई देता है। स्लॉथ के छोटे–छोटे भूरे रंग के बाल, गोल सिर और छोटी–सी पूंछ होती है। लेकिन स्लॉथ का मुंह सपाट होता है। स्लॉथ का शरीर दो फुट से बड़ा नहीं होता।

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

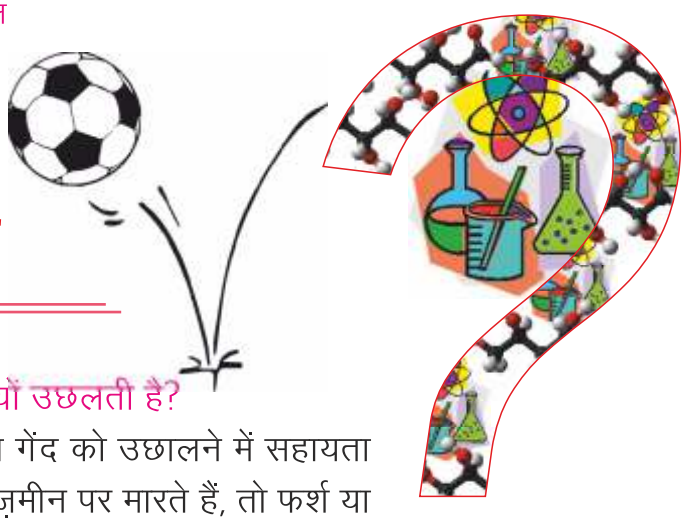

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : फर्श या ज़मीन पर फेंकने पर गेंद क्यों उछलती है?

उत्तर : दरअसल, गेंद में भरी हवा (Air) ही गेंद को उछालने में सहायता करती है। जैसे ही गेंद को फर्श या ज़मीन पर मारते हैं, तो फर्श या जमीन वाला गेंद का भाग अंदर की ओर दब जाता है। फलस्वरूप, गेंद के अंदर वायु का दबाव (Pressure) थोड़ी देर के लिए बढ़ जाता है। परन्तु ज्यों ही वह दबी हुई वायु फर्श या ज़मीन के विपरीत धक्का मारती है तो गेंद उछल पड़ती है। यदि गेंद में छिद्र कर दिया जाए, तो वह पहले की अपेक्षा बहुत कम उछलती है।

प्रश्न : कम वाट की होने के बावजूद ट्यूबलाइट में बल्ब से अधिक रोशनी क्यों होती है?

उत्तर : दरअसल, बल्व में टंगस्टन धातु का फिलामेंट (Filament) होता है जो विद्युत आवेश से गर्म होकर रोशनी (Light) देता है जबकि ट्यूबलाइट (Tube Light) में किसी फिलामेंट का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसके एक सिरे पर धनात्मक (Positive) एवं दूसरे सिरे पर ऋणात्मक (Negative) आवेश (Charge) के बिंदु होते हैं जो विद्युत–प्रवाह होने पर तेजी से एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। परिणामस्वरूप, रोशनी पैदा होती है और यह रोशनी बल्ब की तुलना में अधिक होती है।

प्रश्न : स्विच दबाने पर बल्ब की तुलना में ट्यूबलाइट को जलने में अधिक समय क्यों लगता है?

उत्तर : तुमने अक्सर अपने घरों में देखा होगा कि बल्ब तो स्विच दबाते ही जल उठता है किंतु ट्यूबलाइट को जलने में कुछ समय लग जाता है।

क्या तुमने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? दरअसल, सामान्य भाषा में इसे ट्यूबलाइट का 'उठना' कहते हैं। यदि वोल्टेज कम हो या स्टार्टर चोक में कोई कमी हो तो ट्यूबलाइट के जलने में बाधा पड़ती है। दूसरी ओर, कम वोल्टेज में बल्ब जल जाता है।

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

कभी न भूलो

★ ब्रह्म की प्राप्ति, भ्रम की समाप्ति।

★ धर्म वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य असल में मनुष्य बनता है।

★ हीरे के गुण ही अपने आप में उसको कीमती बनाते हैं। भक्त भी कर्म के द्वारा बोलता है, सबसे असरदायक बोल कर्म ही हुआ करता है।

★ ज्ञान का सूर्य उदय होने पर प्यार का जन्म होता है और नफ़रत समाप्त हो जाती है जबकि अभिमान के कारण भक्ति और सुमति से भी हाथ धोना पड़ता है। – बाबा हरदेव सिंह जी

★ प्रत्येक वस्तु मूल्यवान है लेकिन सर्वोपरि है। जीवन की मुक्ति सद्गुरु द्वारा ही सम्भव है।

– सन्त निर्मल जोशी

★ अवगुण नाव की पेंदी के छेद के समान हैं जो चाहे छोटा हो बड़ा, एक दिन उसे डुबो ही देगा – कालीदास

★ अवसर उनकी मदद कभी नहीं करता जो अपनी मदद नहीं करते।

– सफोक्लीज

★ अवसर बुद्धिमान के पक्ष में लड़ता है।

– यूरीपिडीज

★ दूसरों की गलतियों से सावधानी सीखना ही अधिक उचित है।

– साइरस

★ अच्छा दिल सोने जैसा मूल्यवान होता है। – शेक्सपीयर

★ उस मनुष्य से अधिक दरिद्र कोई नहीं है जिसके पास सिर्फ पैसा ही है।

– एडविनपग

★ आशा, विश्वास, प्रेम इन सबमें सबसे बड़ा प्रेम है। – बाइबिल

★ अतीत में जैसा भी कुछ कर्म किया गया है वह भविष्य में उसी रूप में उपस्थित होता हैं। – महावीर स्वामी

★ समय और सागर की लहर किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। – रिचर्ड ब्रेथहेड

★ नीच की नम्रता के प्रति सावधान रहो। धनुष, सांप और बिल्ली झुककर ही वार करते हैं। – बाल्मीकि

★ व्यस्त व्यक्ति के पास आंसू बहाने का वक्त नहीं होता। – वायरन

★ शिष्य का कर्तव्य है कि जिस गुरु से धर्म प्रवचन सीखे, उसकी निरंतर भक्ति करें।

★ जैसे भगवान सच्चा है वैसे ही उसको पाने का मार्ग और धर्म भी सच्चा है। मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।

★ जो दूसरों के लिए जीते हैं वे ही वास्तव में जीवित हैं।

–अज्ञात

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

अनोखी होली

होली का दिन था। अमन सुबह–सुबह अपनी साइकिल पर एक गली से गुजर रहा था। तभी किसी ने ऊपर से उस पर पानी फेंक दिया। अमन एकदम घबरा गया। उसने ऊपर देखा तो शरारती जग्गी खुशी से चिल्ला रहा था, ''होली है।''

अमन चुप रहा। वह ठिठुरता हुआ वापिस घर लौटा। दुबारा कपड़े पहन कर दूसरी गली से निकल गया। वास्तव में अमन अस्पताल में अपने दादा जी के लिए घर से दूध लेकर जा रहा था। उसके दादा जी पिछले कुछ दिनों से अस्पताल में दाखिल थे। उन्हें सांस की तकलीफ थी। शहर की जिस गली में उनका परिवार रहता था वह गली बहुत तंग थी। वहाँ खुली हवा कम मिलती थी। डॉक्टरों ने उसके दादा जी

को यह सलाह दी थी कि वह बाहर खुली हवा में जरूर सैर किया करें। वह घर में अकसर यही कहते थे, ''मैंने अमन के स्कूल में बहुत से पेड़ खुद लगाये थे अपने हाथों से लेकिन जब से स्कूल की नई बिल्डिंग बनी है, सभी पेड़ काट दिये गये हैं। अब साफ और ताजा हवा कहाँ से आये? हर तरफ धुआं ही धुआं और प्रदूषण ही प्रदूषण।''

दादा जी ज्यादा न बोल पाते। उनकी सांस फूलने लगती। अमन बेबस होकर देखता रहता। उनकी पीठ सहलाता रहता। ऐसा ही सड़क पर लगे वृक्षों के साथ हुआ

था। कुछ लालची जनों की उन पर बुरी नजर पड़ गई थी।

अमन को जग्गी पर रह–रहकर गुस्सा आ रहा था। उसका एक मन करता कि उससे बदला ले। लेकिन फिर दादा जी की सीख भी याद आ जाती, ''संकट की घड़ी में सदैव धैर्य रखो।''

अमन दादा जी को अस्पताल में दूध पिलाकर फिर घर लौट आया। तब उसके पापा भी अस्पताल में पहुँच चुके थे।

अमन ने आकर देखा, उसके सभी साथी हाथों में पिचकारियां लेकर एक दूसरे को रंग रहे थे। अमन ने पिछले साल खूब होली खेली थी। लेकिन ऐसा मजाक किसी के साथ नहीं किया था जिससे किसी को परेशानी हो।

''अमन, तुम होली क्यों नहीं खेल रहे?'' दूसरी गली से आये दीपक ने उससे पूछा।

अमन बोला, ''दादा जी अस्पताल में दाखिल हैं न। अब उनके लिये खाना लेकर जाना है। मम्मी खाना बना रही हैं।''

अमन अस्पताल में खाना देकर फिर वापिस आया। उसने देखा, जग्गी फिर शरारतें करता आ रहा था। उसके पास कई गुब्बारे थे। जिनमें रंग वाला पानी भरा था।

जग्गी ने गली से गुजर रहे एक बुजुर्ग रिक्शा वाले की पीठ पर गुब्बारा मारा। इससे पहले कि रिक्शा वाला उससे गुस्सा होता, वह तेजी से गली में भाग निकला।

अमन दादा जी की खराब होती जा रही सेहत को लेकर उदास था। उसे एक योजना

सूझी। वह अपने दोस्त रंजन और मधुर के पास गया। ये दोनों उसके खास दोस्त थे। उन्हें भी अमन के दादा जी की बीमारी के बारे में पता था।

अमन ने अपनी योजना के बारे में दोस्तों को बताया तो वे सहमत हो गये। इस नेक कार्य में उन्होंने अन्य साथियों को भी शामिल करने की बात कही। मधुर अपनी बड़ी दीदी पम्मी को बुला लाया। वह दसवीं कक्षा में थी। उसको योजना का पता चला तो वह खुश हो गई। उसके मुँह से निकला, ''वाह!''

सभी दोस्त अलग–अलग किस्म के रंग ले आये। वे मोहल्ले के ही एक छोटे से मैदान में इकट्ठे होने लगे। जो भी उन्हें देखता, वहाँ इकट्ठा होने लगता। पारूल, बंटी, परनीत, निर्मल, अंकुश, नागेश, बलदेव, विजय, शीला और दामिनी भी आ गये। सभी अलग–अलग रंगों के छोटे–छोटे लिफाफे ले आये।

अब अमन ने अपने दोस्तों की मदद से जमीन पर रंग–बिरंगे अक्षरों में कुछ लिखा। फिर उसने पास के किसी घर से आठ दस पुराने अखबार मंगवा लिये। जमीन पर लिखे अक्षरों को उनसे ढक दिया।

अपनी योजना अनुसार अमन ने कुछ दोस्तों को वहाँ पर ही रहने दिया। फिर रंजन और मधुर को साथ लेकर नगरपालिका अध्यक्ष के घर गये। अध्यक्ष का घर उसी मोहल्ले में ही था।

नगरपालिका अध्यक्ष मन ही मन हैरान थे। सोच रहे थे पता नहीं बच्चे उन्हें कहाँ लेकर जा रहे हैं? अध्यक्ष के साथ मोहल्ले के कुछ और सज्जन भी साथ आने लगे। इनमें जग्गी भी था। तब तक जग्गी को भी अमन के दादा जी के बीमार होने का पता चल गया था। उसने अमन से ऐसी घटिया हरकत के लिये माफी मांगी।

अब अमन नगरपालिका अध्यक्ष से बोला, ''अंकल जी, आप सभी अखबार अपने हाथों से उठायें और हमारी कला का मुहुर्त करें।''

नगरपालिका अध्यक्ष ने ज्यों ही सभी अखबार उठाये। लिखे शब्दों को ऊँचे स्वर में पढ़ने लगे, ''पेड़ों बिन सूना संसार। पेड़ों से रंगीन त्योहार।''

इन पंक्तियों को पढ़कर अध्यक्ष बोले, ''बच्चों, होली के दिन इन रंग–बिरंगे खूबसूरत अक्षरों ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया है। आपका यह संदेश केवल मेरे लिये ही नहीं बल्कि सभी व्यक्तियों के लिये है कि हम अपनी प्राकृतिक–धरोहर को बचायें। पेड़–पौधे होंगे तभी मनुष्य जिंदा रह सकेगा। शुद्ध वातावरण में होली जैसे त्योहारों को ज्यादा उत्साह से मनाने का मजा और ही होगा।''

अध्यक्ष जी ने सभी बच्चों के चेहरों पर थोड़ा गुलाल लगाया। खुद भी लगवाया।

अगले दिन नगरपालिका अध्यक्ष बच्चों के साथ शहर के अलग–अलग स्थानों पर नन्हें पौधे लगा रहे थे।

मोहल्ले में इस अनोखी होली की चर्चा हो रही थी।

साक्षात्कार : चन्द्रप्रकाश चौरसिया

प्रस्तुति : हरजीत निषाद

प्रेरक व्यक्तित्व :

मेहनत कीजिए तो कोई भी सपना आपसे दूर नहीं होगा- दीपा मलिक

- 29 साल की उम्र में कमर के नीचे का हिस्सा पैरोलाइज्ड।
- शॉट पुट में कैरियर बनाया। जैवलिन थ्रो भी सीखा।
- स्विमिंग, ड्राइविंग में लिम्का बुक रिकॉर्ड। रियो द जेनेरियो पैरालिंपिक गेम्स में सिल्वर मेडल।
- अर्जुन अवार्ड से भी सम्मानित।
- 26 जनवरी, 2017 को स्पोर्ट्स–एथलेटिक्स हेतु पद्मश्री से सम्मानित।

दिव्यांगता एक ऐसा शब्द है जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, ऐन्द्रिक अथवा बौद्धिक विकास में किसी प्रकार की कमी को दर्शाता है। दिव्यांगता व्यक्ति के सहज जीवन को अनेक प्रकार से बाधित करता है। शारीरिक हो अथवा मानसिक दिव्यांगता व्यक्ति को असहाय बना देती है। यह अलग बात है कि विश्वभर में दिव्यांग लोगों ने इसे एक चैलेंज के रूप में स्वीकार किया और अशक्त शरीर से बेमिसाल कार्य करके दुनिया को हैरान कर दिया।

ऐसी ही एक ऊर्जावान और आत्मिक रूप से अत्यंत बलशाली महिला है दीपा मलिक। जिनका आत्मविश्वास और कठिन परिश्रम उन्हें अप्रत्याशित ऊँचाईयों तक ले गया। हम सभी जानते हैं कि हमारे बड़े हमें हमेशा कहते हैं कि मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों से निकला जा सकता है, परन्तु इसके लिए आत्मविश्वास का होना बहुत जरूरी है। आत्मविश्वास से ओतप्रोत दीपा मलिक पैरालिंपिक गेम्स में भारत को पहली बार सिल्वर मेडल दिलाने में सफल रहीं।

दीपा भले ही एक आम व्यक्ति की तरह चल–फिर नहीं पाती हैं, लेकिन आज वे पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल हैं। रियो द जेनेरियो (ब्राजील) में 2016 में सम्पन्न पैरालिंपिक गेम्स में सिल्वर मेडल जीतने वाली दीपा मलिक का जन्म 30 सितम्बर, 1970 को हरियाणा के सोनीपत में हुआ था। दीपा मलिक को 17 साल पहले 29 वर्ष की उम्र में लकवा मार गया और कमर के नीचे का उनका पूरा शरीर लकवाग्रस्त हो गया। जिसकी वजह से उनकी जिंदगी व्हील चेयर पर सिमट कर रह गई,

लेकिन अपने आत्मविश्वास के बल पर दीपा ने व्हील चेयर को अपनी सफलता का जरिया बना लिया और आज दुनिया में सिर्फ दिव्यांग ही नहीं बल्कि उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई हैं जो छोटी–छोटी बातों से परेशान होकर अपनी किस्मत को कोसते हैं और अपनी असफलताओं के लिए निराकार–प्रभु से शिकायत करने लगते हैं।

प्रस्तुत है चंद्र प्रकाश चौरसिया के साथ दीपा मलिक से हुई बातचीत के प्रमुख अंश–

✯ दीपाजी, मैंने बहुत से मल्टीटैलेंटेड (प्रतिभावान) लोग देखे हैं लेकिन आप बहुप्रतिभावान हैं जैसे कि आपने 'स्विमिंग', 'बाइकिंग', 'कार रैली', 'जेवलिन', 'शॉटपुट', 'डिस्कस थ्रो' और 'कुकिंग' मतलब एक साथ काफी कुछ कर लिया। क्या कुछ और करने से रह गया है अभी?

❖ अभी तो बहुत कुछ बचा है... जैसे 'सी स्विमिंग', 'स्नॉर्कलिंग', 'स्कूबा डाइविंग'। हो सकता है कि हवाई जहाज भी उड़ाने का मन कर जाए तो वो भी उड़ाने निकल जाऊंगी।

✯ दीपाजी, आमतौर पर व्हीलचेयर (पहिए वाली कुर्सी) मतलब बात खत्म, लेकिन आपने तो नई शुरुआत ही कर दी।

❖ मुझे लगा कि जब जीवन में ये कुर्सी मिल ही गई है तो या तो मैं इसे रोकर गुजार दूं या कुछ ऐसा ढूंढ लूं जिसमें मुझे कोई वजह मिले, सेल्फ मोटिवेशन (स्वप्रेरणा) मिले। तो जब मैं इस 'जर्नी' पर चली तो मुझे लगा कि मेरे काम से लोगों की मानसिकता में बदलाव आ रहा है, पॉलिसी तक बदल रही है। इतना बदलाव कि प्रधानमंत्री मुझे नीति आयोग के तहत 'वुमेन ट्रांस्फॉर्मिंग इंडिया' का खिताब देते हैं। मुझे राष्ट्रपति का रोल मॉडल अवॉर्ड मिल जाता है। तो मैं चाह रही हूँ कि दिव्यांगता को एक अभिशाप नहीं, इसको प्रभु का उपहार समझकर जीवन में आगे बढ़ा जाए। 'डिसेबल पर्सन' को 'बेचारा' की नजर से नहीं गर्व से देखें।

✯ अपनी पहचान बनाने का अहसास कैसा है आपके लिए?

❖ मेरे लिए यह बहुत सुखद एहसास है कि मैं लोगों को प्रेरित कर पा रही हूँ। मुझे कोई रोल मॉडल नहीं मिला, लेकिन मैं चाहती हूँ कि लोगों को मेरे जरिये रोल मॉडल मिले। मुझे हरियाणा की एक सामाजिक पंचायत (मलिक खाप) ने सम्मान स्वरूप गदा भेंट की है, यह कहते हुए कि मैंने अपने जीवन के अखाड़े में शानदार प्रदर्शन किया है।

✯ जब आप 'लो फील' करती हैं तो क्या करती हैं?

❖ मैं सबसे कहती हूँ कि हर किसी के पास खुश रहने की वजह होनी चाहिए और वो होती है आपके जूनून में, आपकी Hobby (शौक) में। मुझे कुकिंग, बाइकिंग, कार ड्राइविंग पसंद है और वो मैं करने लग जाती हूँ।

✯ आपने मोटीवेशनल स्पीच (प्रेरणादायक भाषण) देने की शुरुआत कैसे की?

❖ लाइफ में एक टाइम ऐसा आया कि फंड मैनेज नहीं हो पा रहा था। स्पोर्ट्स में रहते हुए फुल टाइम जॉब नहीं हो पा रही थी। मुझे अपना रेस्टोरेंट बंद करना पड़ा तो लगा कि मुझे कुछ ऐसा करना चाहिए कि मैं खेल भी सकूं और पैसा भी कमा सकूं। मेरे कुछ मित्र कॉरपोरेट जगत में हैं जिन्होंने कहा कि दीपा तुम बहुत अच्छी बोलती हो, मोटीवेशनल स्पीच में तुम अपनी कहानियां ही सुनाया करो। लोग छोटी–छोटी बातों में रोने लगते हैं और तुम हमेशा खुश रहती हो। फिर एक दो स्पीच के बाद मुझे लोग मोटीवेशनल स्पीच के लिए आमंत्रित करने लगे।

✯ इतने सारे गेम खेलते हुए 'जेवलिन' और 'शॉट पुट' तक कैसे आ गईं आप?

❖ छोटी बेटी स्विमिंग से डरती थी, मैं उसे हौसला देने के लिए पानी में उतरी। तब मुझे लगा, मैं तैर सकती हूँ। फिर महाराष्ट्र के पैरा–ओलंपिक कैंप में किसी ने मुझसे कहा कि अगर मैं स्विमिंग करूं तो यह मेरे वर्ग के लिए अलग बात होगी। शादी से पहले स्टेट लेवल तक बॉस्केटबॉल खेला था। स्विमिंग में सिल्वर मेडल भी मिला, लेकिन लंबे समय तक उसे जारी नहीं रख सकी, क्योंकि ठंडे पानी में ज्यादा रहने से मुझे स्ट्रोक पड़ सकता था। भारत में चेंजिंग रूम्स भी विकलांगों के हिसाब से डिजाइन नहीं होते। मैं हारे हुए व्यक्ति की तरह स्विमिंग नहीं छोड़ना चाहती थी। मैंने कोच से कहा– मैं चाहती हूँ कि लोग मेरा नाम याद रखें। मैंने इलाहाबाद में गंगा नदी को बहाव के विपरीत तैरकर पार किया और लिम्का बुक में नाम दर्ज कराया।

✯ एथलेटिक्स का सिलसिला कब शुरू हुआ?

❖ 2009 में एथलेटिक्स का सिलसिला शुरू हुआ। मैंने 39 की उम्र में जेवलिन और शॉट पुट पकड़ना सीखा और मेडल जीता। वही मेडल मुझे कॉमनवेल्थ गेम्स तक ले गया। यह मेरे लिए सुनहरा मौका था। मुझे लंदन जाने का मौका मिला। वहाँ इंटरनेशनल एक्सपोजर मिला। यह बात मेरे लिए बहुत बड़ी थी।

✯ कोई यादगार–बात याद आती हो तो बताएं?

❖ जब मैं छोटी थी तो दोपहर के वक्त जब सब घरों में होते थे तो मैं चुपके से भाई की साइकिल लेकर सड़कों पर निकल जाती थी। चार–पांच राउंड लगाने के बाद वापस आकर रख देती थी। बहुत छोटी उम्र में मैंने गाड़ी सीख ली थी, यही वजह है कि आज भी बाइकिंग का शौक है। मेरी बीमारी की वजह से घर वाले मना करते थे लेकिन मैं तो अपना काम कर ही लेती थी। किसी को पता ही नहीं चला कि मैं कब साइकिल चलाना सीख गई।

★ एक ऐसी लड़की, जो बीमारी की वजह से ठीक से चल भी नहीं सकती थी। आज पूरी दुनिया उसके बारे में बात कर रही है, यह देखकर कैसा महसूस होता है?

❖ बीमारी की वजह से मुझे हॉस्पिटल में जाकर ट्रेनिंग करनी पड़ती थी। मेरे दिमाग में आया कि यही ट्रेनिंग अगर मैं खेल के मैदान में करती हूँ तो लोग मुझे खिलाड़ी बोलेंगे न कि पेशेंट। तो अपनी पहचान बदलने के लिए मैं खेलों से जुड़ गई और फिर मुझे वहाँ एक लक्ष्य मिल गया। फिर उसकी पॉलिसी में काम करने लगी तो एक अच्छा वैल्यू एडिशन (मेहनत का फल) मिल गया। अगर मैं ये न करती तो लोग कहते कि इसका जीवन बेकार हो गया लेकिन अब मेरे पास एक वजूद (अस्तित्व) है।

★ अभी फुर्सत के समय में आप क्या करती है?

❖ खाना बनाती हूँ, पेंटिग करती हूँ, मोटिवेशनल बुक पढ़ती हूँ, मूवी देखती हूँ, दोस्तों से मिलती हूँ... बस मुझे घर में बोर होना पसंद नहीं।

★ अभी तो बहुत–सी ख्वाहिशें अधूरी होंगी?

❖ रियो में गोल्ड आना चाहिए था। बहुत कम अंतर से गोल्ड मेडल निकल गया। मुझे गोल्ड ही चाहिए।

★ वे दिन जो आप चाहती हैं फिर से वापस आ जाएं?

❖ जब मैं ठीक थी तब मुझे ट्रैकिंग का बहुत शौक था। जैसे मांउटेन ट्रैकिंग, छोटी–छोटी पगडंडियों पर चलना। मुझे डांसिंग का बहुत शौक है। जब कोई पसंदीदा गीत सुनती हूँ तो दिमाग में आता है कि अगर मैं डांस करती तो ये स्टेप ऐसे नहीं वैसे करती। अपने घर की लेडीज़ संगीत की जान होती थी मैं। वो मिस करती हूँ, लेकिन दुखी होकर नहीं खुश होकर। पर आप ये मत समझिएगा कि मैं अपनी टांगों को मिस करती हूँ।

★ आप बहुत से लोगों के लिए प्रेरणा–स्रोत हैं, आपकी प्रेरणा कौन है?

❖ मेरी प्रेरणा हर वो व्यक्ति है जो अपना काम पूरी ईमानदारी से, दिल से और अपनी क्षमता का शत–प्रतिशत देकर करता है।

★ 'हँसती दुनिया' के माध्यम से बच्चों को आप क्या मैसेज़ देंगे।

❖ हमेशा पॉजिटिव (सकारात्मक) सोच रखिए। मेहनत करने की आदत डालिये, क्योंकि अगर सोच सकारात्मक होगी और मेहनत का ज़ज़्बा अन्दर से जगेगा तो फिर कोई भी सपना आपसे दूर नहीं होगा। अपने माता–पिता और गुरु का सम्मान कीजिए। ●

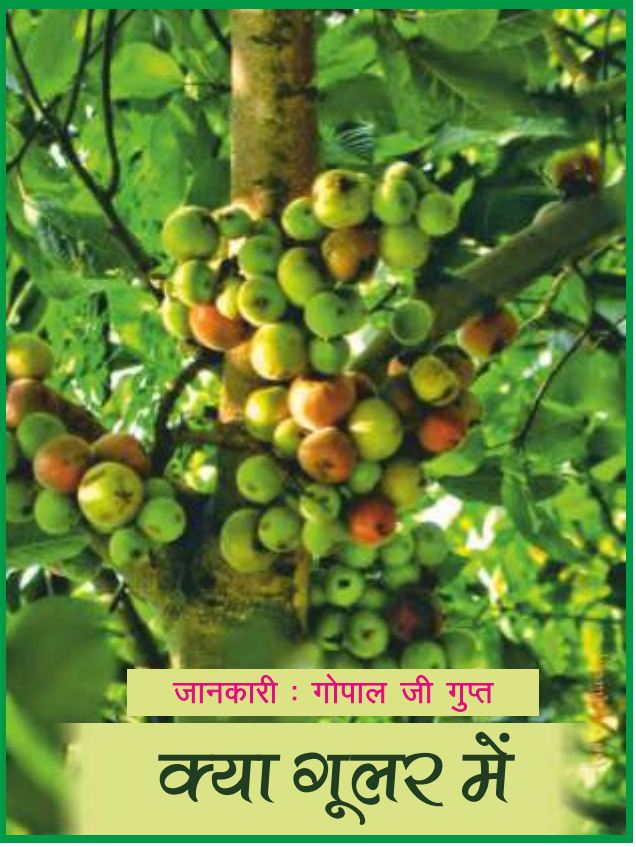

जानकारी : गोपाल जी गुप्त

क्या गूलर में फूल नहीं होता?

हिन्दी में एक मुहावरा है 'गूलर का फूल होना' जिसका भावार्थ है कि काफी दिनों बाद मुलाकात होना। गूलर के फूल को लेकर अनेक किंवदन्तियां, मान्यताएं, दन्तकथायें हैं। जैसे कि गूलर का फूल जिसे दिख जाए उसका भाग्योदय हो जाता है, या गूलर का फूल आधी रात में केवल थोड़ी देर के लिए फूलता है, या गूलर का फूल होता ही नहीं वगैरह वगैरह... अन्य शब्दों में कहा जाए तो इसका आशय यह है कि गूलर का फूल इतना दुर्लभ है कि किसी को दिखाई नहीं देता।

वनस्पति शास्त्र के अनुसार सृजन का लैंगिक सिद्धान्त गूलर पर भी लागू होता है अर्थात् फल बिना फूल के नहीं बनता और फूल का परागण फल बनने के लिये आवश्यक है। अतः क्या कारण है कि गूलर का फूल किसी को दिखाई नहीं देता?

गूलर, जिसे संस्कृत में उदुम्बर, अंग्रेजी में सायकामोर (Sycamore) तथा वनस्पति शास्त्र में फाइकस ग्लोमेरेटा (Ficus Glomerata) कहते हैं। यह साइकोनस वर्ग का वृक्ष है जिसे भारत में अत्यंत पवित्र माना जाता है। इसका फल, जो पकने पर ताम्बई रंग का हो जाता है। मीठा तथा पौष्टिक होता है। ये मौसल रूप में होता है। जब इसका पका फल पृथ्वी पर गिरकर फट जाता है या जब इसे तोड़कर बीच से फाड़ा जाता है तब इसमें से सैकड़ों की संख्या में नन्हें–नन्हें कीट–पंतगें निकलकर उड़ जाते हैं। जब तक यह फल फूटता नहीं है ये कीट उसी में कैद रहते हैं।

वनस्पति शास्त्र में गूलर के फल को संग्रथित या कम्पोजिट (Composit) कहते हैं; जिसमें नर तथा मादा फूल एक–साथ जुड़े रहते हैं। साइकोनस फल की यही प्रकृति होती है। इसी श्रेणी में पीपल, बरगद, पाकड़ आदि भी आते हैं। साइकोनस फल में पूरा पुष्पक्रम ही फल का रूप ले लेता है। इसमें (साकोनस में) पूरा पुष्पासन (थेलमस या रेकिस अथवा पूरा अंदरूनी भाग) मौसल होकर फल बन जाता है। इसी प्रक्रिया के अनुसार गूलर का फल भी बनता है।

यदि गूलर के फल को लम्बाई की ओर से बीचो–बीच (अनुदैर्ध्य) काटा जाए तो गूलर

के फूल का पूरा रहस्य प्रकट हो जाता है। इस तरह काटे जाने पर उसमें चारों तरफ भूरे रंग की पतली रेशों की तरह आकृतियां झलकती हैं। वे ही वास्तव में गूलर का फूल होती हैं, चूंकि ये गूदेदार पुष्पासन (थेलमस या रेकिस) से ढकी रहती हैं। इसी से ये दिखाई नहीं देती हैं। इसे समझने के लिए यह जान लें कि ये फूल गेंद जैसी आवरण में छिपी रहती हैं।

प्रसंगवश जैसा कि वनस्पति विज्ञान का सिद्धांत है, फूल का परागण भी आवश्यक है तो गूलर के फूल का परागण भी अवश्य ही होता है। इसकी परागण प्रक्रिया भी विचित्र ढंग से होती है जिसकी व्यवस्था प्रकृति स्वयं ही सम्पादित करती है। गूलर के फल के रोमयुक्त (रोंयेदार) प्रवेशद्वार के निकट नर फूल रहता है तथा पेन्दे की तरफ मादा फूल। कीट पतंगें आकर्षित होकर रोमिल प्रवेश द्वार से भीतर घुसते तो हैं किन्तु रोंये के कारण वे बाहर नहीं निकल पाते और उसी में कैद होकर नर तथा मादा फूलों के सम्पर्क में आते हैं। जिससे परागण की प्रक्रिया पूरी होती है तथा गूलर का फल बनने लगता है। ये नन्हें कीट–पतंग फल के भीतर तब तक कैद रहते हैं जब तक कि ये फल पककर या तो जमीन पर गिरकर फट न जाये या जब तक कोई आदमी इसे तोड़कर इसे बीच से फोड़े नहीं।

यही कारण है कि इससे सम्बन्धित किंवदन्तियां केवल किंवदन्तियां ही रहती हैं उनमें वास्तविकता नहीं होती।

लुकमान की भक्ति भावना

हकीम लुकमान प्रसिद्ध विद्वान थे। बचपन में वे एक अमीर अरबी के यहाँ गुलाम थे। मालिक उनसे बहुत स्नेह रखता था। एक दिन मालिक उन्हें एक फल का आधा भाग खाने को दिया। लुकमान उसे खाने लगे। जब मालिक ने उस फल को चखा तो वे उसे खा न सके। फल बहुत ही कड़वा था।

वे बोले– लुकमान फल बहुत कड़वा था फिर भी तुम उसे फेंके नहीं और प्रेम से खा गए।

लुकमान बोले– 'मालिक, आप मुझे रोज स्वादिष्ट भोजन और फल देते हैं। एक बार कड़वा फल मिल गया तो इसे खुशी–खुशी क्यों न खाऊँ? यदि फेंक देता तो आपका अपमान न होता?'

मालिक उसके भक्ति भाव से अत्यन्त प्रसन्न हुए। वे समझ चुके थे कि लुकमान कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। उन्होंने उन्हें जीवन का बड़ा सबक दिया है। अल्लाह भी हमें सुख–दुःख समान ही देता है। हमें सुख के समान दुःख भी खुशी–खुशी स्वीकार करना चाहिए। उसने लुकमान के भक्ति भाव एवं विद्वता से प्रसन्न होकर उन्हें गुलामी के बंधन से मुक्त कर दिया।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

पहेलियों के उत्तर

1. बटन, 2. छाता, 3. गेंद, 4. पंखा, 5. गाजर, 6. साइकिल, 7. हाथ, 8. गन्ना।

विशेष लेख : राजकुमार जैन

छोटी-सी हरड़-बड़े-बड़े गुण

आज हम ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि अत्यंत कारगर व गुणकारी घरेलू पद्धति के औषधिय उपयोगों को भी भूलते जा रहे हैं। अंग्रेजी दवाओं के सेवन से मिलने वाली तात्कालिक राहत में हमने इसके पश्चातवर्तीय कुप्रभावों को नजरअंदाज कर दिया है। आयुर्वेद हमारी अति प्राचीन आजमाई हुई चिकित्सा–पद्धति है। इसमें रोग के लक्षणों की अपेक्षा रोगों के कारणों के निदान पर जोर दिया जाता है।

आयुर्वेदिक उपचार में प्रयुक्त होने वाली औषधियों में से अधिकांश बहुत ही साधारण घरेलू वस्तुएं हैं, जो कई रोगों में कारगर होने के साथ बिल्कुल हानिरहित होती हैं। 'हरड़' भी एक ऐसी ही घरेलू औषधि है, जिसे आयुर्वेद में एक गुणकारी एवं दिव्य रसायन औषधि माना गया है।

हरड़ को संस्कृत में 'हरीतकी' नाम से जाना जाता है। इसके अन्य नाम 'शिवा', 'पथ्या', 'अभ्या', 'चेतकी', 'विजया', 'रोहिणी', 'पूतनाव', 'अमृतजीवनी' आदि हैं। अंग्रेजी में इसे 'चेब्यूलिक मायरोबेलन' कहा जाता है। आयुर्वेद में हरड़ के सात प्रकार बताए गए हैं। हरड़ मध्यम आकार के वृक्ष पर उगती है। हिमालय के तराई क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली चेतकी हरड़ सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इस हरड़ का आकार सामान्य से काफी बड़ा होता है और इसका रंग धवल (सफेद) होता है। अभ्या हरड़ नेत्र–विकारों में उपयोगी है, जबकि रोहिणी हरड़ रक्त विकारों के उपचार में लाभकारी मानी जाती है।

हरड़ की उपयोगिता के सम्बन्ध में आयुर्वेद–चिकित्सा के विभिन्न शास्त्रों में विशद वर्णन मिलता है। इसकी उपयोगिता को रेखांकित करते हुए यह कहावत प्रचलित है कि जिस घर में मां नहीं होती, उस घर में हरड़ मां की भांति बच्चों की देखभाल की भूमिका निभाती है। भावप्रकाश निघण्टू में बताया गया है कि हरड़ पीसकर चूर्ण के रूप में इस्तेमाल करने से कब्ज दूर होती है। चबाकर खाई गई हरड़ शरीर के ताप को संतुलित करती है। उबालकर खाने से दस्त बंद होते हैं तथा भूनकर उपयोग करने से यह तीनों दोषों का निदान करती है।

हरड़ एक गर्म तासीर वाली वस्तु है। इसमें पच्चीस प्रतिशत गैली टेनीक अम्ल पाया जाता है। यह बल और बुद्धिवर्द्धक होने के साथ–साथ नेत्र–ज्योति बढ़ाती है। उदर–रोगों और पाचन–तंत्र को सक्रिय बनाने में हरड़ एक रामबाण दवा है। हरड़ में विजातीय पदार्थों को शरीर से बाहर निष्कासित करने की अदभुत शक्ति समाहित होती है। इसी कारण यह कब्ज व अन्य उदर संबंधी रोगों को दूर कर पाचन–संस्थान को सुदृढ़ करती है।

पुरानी कब्ज के रोगियों को नित्य प्रति भोजन के आधा घंटा पश्चात डेढ से दो ग्राम

तक हरड़ का चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लेना चाहिए। इसके नियमित सेवन से पुरानी से पुरानी कब्ज दूर हो जाती है।

बीस से बाईस ग्राम हरड़ चूर्ण, दस ग्राम तुलसी के पत्ते, दस ग्राम सेंधा नमक और 25 ग्राम अजवाइन को मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण के सेवन से बदहजमी, पेट–दर्द, अजीर्ण, गैस आदि रोगों में बहुत लाभ होता है।

रक्त–विकार से शरीर पर फोड़े–फुंसी हो जाते हैं तथा चर्म रोग होने की आशंका रहती है। रक्त–शुद्धि के लिए हरड़, बहेड़ा तथा आंवला को समान मात्रा में मिलाकर त्रिफला चूर्ण तैयार कर लें और प्रतिदिन रात्रि को सोते समय 15–20 ग्राम चूर्ण दूध अथवा गुनगुने पानी के साथ लें। इससे रक्त–विकार तो दूर होते ही हैं, साथ ही कब्ज में भी राहत मिलती है और नेत्र–ज्योति भी बढ़ती है।

मुंह में छाले हो जाने की दशा में हरड़ के चूर्ण का सेवन रात्रि के समय गर्म दूध के साथ करें। इसके चूर्ण को शहद में मिलाकर छालों पर लगाने से शीघ्र राहत मिलती है। हरड़ चूर्ण और कत्थे के चूर्ण से बने मंजन से दांत रगड़ने से दांत एकदम साफ हो जाते हैं व मसूढ़े स्वस्थ एवं मजबूत होते हैं।

हरड़ को रात–भर साफ पानी में भिगोए रखें और सुबह उस पानी से आंखें धोएं। इससे आंखों को शीतलता मिलती है।

पेट–दर्द होने पर हरड़ को घिसकर गुनगुने पानी के साथ सेवन करें। तत्काल लाभ होगा। हरड़ पेट–दर्द के कारणों को नष्ट कर स्थायी रूप से आराम दिलाती है।

बच्चों को अक्सर पेट में कीड़े होने की शिकायत हो जाती है। बच्चों के पेट के कीड़ों को नष्ट करने के लिए हरड़ चूर्ण के साथ बायविडंग मिलाकर गर्म पानी के साथ लिया जाता है।

बवासीर के मस्सों पर हरड़ को घिसकर मोटा–मोटा लेप करने से राहत मिलती है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि हरड़ एक बहुत अच्छा प्राकृतिक एंटीसेप्टिक भी है। जख्म या घाव को हरड़ के काढ़े से धोने से घाव जल्दी भर जाता है। हरड़ में मौजूद 'माइरों बेलोलीन' नामक तत्व पुराने घावों को शीघ्र ठीक करता है।

खाज–खुजली, दाद आदि चर्म रोगों में हरड़ का लेप करने से शीघ्र ही वांछित लाभ मिलता है।

उल्टी और जी मितलाने पर हरड़ के चूर्ण को शहद में मिलाकर दूध के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। छोटी हरड़ के चूर्ण को गर्म पानी के साथ लेने से हिचकियां आना रूक जाती हैं।

हरड़ को वर्षा–ऋतु में सेंधा नमक के साथ, शरदऋतु में शर्करा के साथ, हेमंत में सौंठ के साथ, शिशिर में पिपली के साथ, बसन्त में शहद के साथ तथा ग्रीष्म में गुड़ के साथ सेवन करना अत्यंत लाभकारी रहता है।

हरड़ का सेवन गर्मी व प्यास से पीड़ित होने पर, थकान के समय, गर्भवती स्त्रियों के लिए और रक्त–स्राव के समय करना वर्जित है।

हरड़ के समुचित सेवन से हम कई छोटी–मोटी बीमारियों से सहजता से मुक्ति पा सकते हैं। वास्तव में यह छोटी–सी हरड़ बड़े–बड़े गुणों से युक्त है। हरड़ के सेवन को आदत बनाइए।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

हम बच्चों के अद्‌भुत खेल

मस्ती वाले बड़े निराले,
हम बच्चों के अद्‌भुत खेल।

संडे के दिन हम सब करते,
धमाचौकड़ी रेलमपेल।
कभी दौड़ते कभी भागते,
कभी खेलते ठेलमठेल।।
हम बच्चों के.....

कोई बनता चोर सिपाही,
कोई बनता इंजन रेल।
कोई पुलिस सिपाही बनकर,
पहुँचाता है सबको जेल।।
हम बच्चों के.....

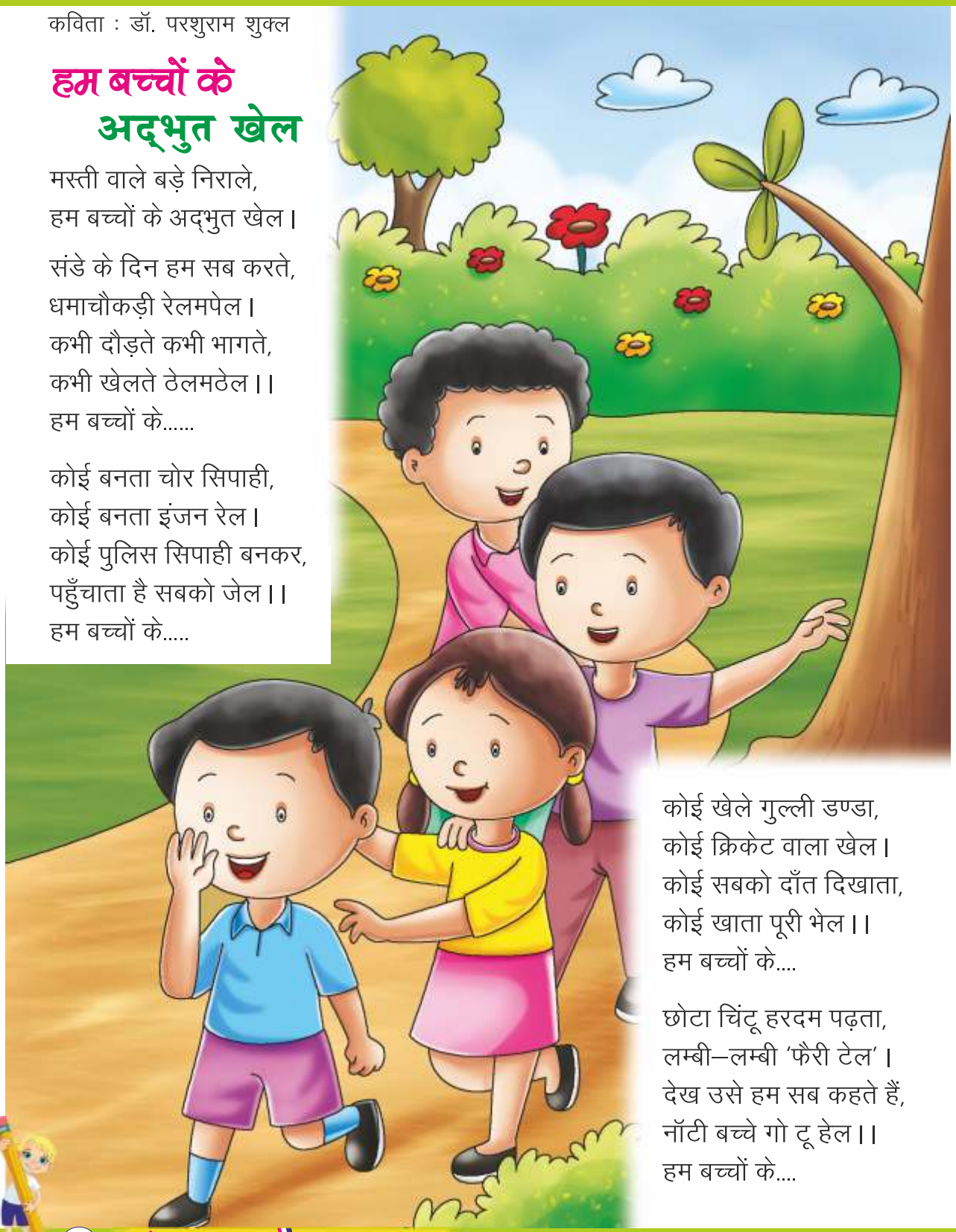

कोई खेले गुल्ली डण्डा,
कोई क्रिकेट वाला खेल।
कोई सबको दाँत दिखाता,
कोई खाता पूरी भेल।।
हम बच्चों के....

छोटा चिंटू हरदम पढ़ता,
लम्बी–लम्बी 'फैरी टेल'।
देख उसे हम सब कहते हैं,
नॉटी बच्चे गो टू हेल।।
हम बच्चों के....

आपके पत्र मिले

तीन क्षणिकाएं : सरीना महता

पेपर

आए हमारे पेपर
अब क्या करें
पढ़ना पड़ेगा,
पेपर में पास होना है तो
पढ़ना पड़ेगा।

पढ़ें!

आओ बच्चो पढ़ें!
मन लगा के पढ़ें!
दिल लगा के पढ़ें।
मेहनत से पढ़ें।
हिम्मत से पढ़ें।
डर लगाकर न पढ़ें।
आओ बच्चों पढ़ें!!

होली

होली आई रे, होली आई रे !
रंगों का त्योहार होली आई रे !!
आओ पिचकारी से भिगोएं।
खुशियों का त्योहार है।
रंगों का त्योहार होली आई रे !
होली आई रे !!

हँसती दुनिया का जनवरी का अंक मिला। इस अंक में 'दादाजी' एवं 'किट्टी' (चित्रकथाएं) अच्छी लगीं।

कविताओं में 'नववर्ष का अभिनंदन' (नदीम हसन 'चमन', 'गणतंत्र ने दिया' एवं 'संविधान देता है हक' (हरजीत निषाद) तथा 'भारत देश हमारा प्यारा' (महेन्द्र कुमार वर्मा) पसन्द आईं।

'ब्रह्मा की परीक्षा' (डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी) एवं 'बुढ़िया की अक्लमंदी' (राधेलाल 'नवचक्र') कहानियां भी शिक्षाप्रद हैं।

पत्रिका में सकारात्मक सामग्री होने के कारण यह हर आयु वर्ग के पाठक के लिए पठनीय बन पड़ी है। पत्रिका समाज को कुछ न कुछ संदेश देकर जाती है।

लेख भी अच्छे होते हैं। प्रेरक–प्रसंग बच्चों के बौद्धिक विकास हेतु उत्तम हैं।

स्तम्भों में 'अनमोल वचन' एवं 'कभी न भूलो' ज्ञानवर्द्धक होते हैं।

– महेन्द्र भाटिया (अमरावती)

पढ़ो और हँसो

शिक्षक : बच्चों, ध्यान लगाकर पढ़ो।

एक छात्र : गुरुजी, मैं तो चश्मा लगाकर पढ़ रहा हूँ, ध्यान लगाकर कैसे पढ़ूं?

★ ★ ★ ★ ★

पिता : (बेटे से) तुम्हें गणित में कितने अंक मिले हैं?

बेटा : जितने भैया को मिले उससे 10 कम।

पिता : भैया को कितने अंक मिले?

बेटा : जी 10 अंक।

– प्रेरणा अरोड़ा (गाजियाबाद)

★ ★ ★ ★ ★

संता बर्फ का टुकड़ा हाथ में लेकर उसे ध्यान से देख रहा था।

बंता : (संता से) तुम ये बर्फ के टुकड़े को इतने ध्यान से क्यों देख रहे हो?

संता : देख रहा हूँ, ये कहाँ से लीक कर रहा है?

★ ★ ★ ★ ★

अध्यापक : दीपक बताओ, संगमरमर किसे कहते हैं?

दीपक : जी सर, जब दो आदमी एक साथ मरते हैं; उसे संगमरमर कहते हैं।

– उर्मिला गुप्ता (मुंबई)

★ ★ ★ ★ ★

दो गप्पी आपस में –

एक गप्पी : (दूसरे गप्पी से) जब मेरे दादाजी मरे तो वह लाखों रुपये छोड़ गये।

दूसरा गप्पी : अरे यह तो कुछ भी नहीं, जब मेरे दादा जी मरे तो वह सारी दुनिया ही छोड़ गये।

एक घमंडी दोस्त : (दूसरे दोस्त से) तुम्हें पता है, मैं बड़ो–बड़ो को पानी पीला चुका हूँ।

दूसरा दोस्त : अच्छा, तो तुम जरूर किसी बड़े होटल में काम करते होंगे।

– श्याम बिल्दानी (बड़नेरा)

★ ★ ★ ★ ★

भइया : (दीपक से) मैंने चोरी की। इसका अंग्रेजी में अनुवाद करो।

दीपक : वाह! चोरी आपने की इसलिए अनुवाद भी आप ही कीजिए।

★ ★ ★ ★ ★

पिता : (पुत्र से) दीवारों पर चित्र तुमने बनाए हैं?

पुत्र : हाँ, पिताजी।

पिता : लेकिन दीवारों पर चित्र बनाने के लिए किसने कहा था?

पुत्र : आपने ही तो कहा था कि यह ड्राइंग–रूम है।

★ ★ ★ ★ ★

अफसर : क्या तुम्हारे गाँव में कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ है?

ग्रामीण : जी नहीं, हमारे यहाँ तो छोटे बच्चे ही पैदा होते हैं।

– पंकज राठौर (कन्नौज)

अध्यापक : (छात्रों से) बच्चो बताओ– अनपढ़ तथा भैंस में से कौन बड़ा है?

छात्र : सर, पहले आप हमें दोनों की जन्म–तिथि तो बता दो।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

★ ★ ★ ★ ★

भिखारी : (एक गृहस्थी से) एक बेबस लाचार को कुछ खाने को दे दो।

गृहस्थी : बेबस, लाचार क्यों हो? तुम तो स्वस्थ हो।

भिखारी : मैं मांगने की आदत से बेबस, लाचार हूँ।

★ ★ ★ ★ ★

थानेदार : तुम्हारा स्कूटर एक महीना पहले चोरी हुआ था। अब इतने दिनों बाद रपट क्यों लिखवा रहे हो?

अनिरुद्ध : स्कूटर खराब था। सोचा पहले चोर ठीक तो करवा ले।

★ ★ ★ ★ ★

– भई, धोबी मियां, लडडू किस खुशी में बांट रहे हो?

– मेरा गदहा खो गया, इसलिए।

– ये कौन–सी खुशी हुई।

– अच्छा है कि मैं गदहे पर सवार नहीं था। नहीं तो मैंने भी खो जाना था। बच गया।

★ ★ ★ ★ ★

एक चलती ट्रेन में टी.सी. ने एक यात्री से टिकिट की मांग की। यात्री ने जेब से टिकिट निकालकर टी.सी. को दे दी।

टी.सी. टिकिट देखकर बोला– यह तो प्लेटफार्म टिकिट है।

यात्री ने जवाब दिया– मुझे प्लेटफार्म पर ही उतरना है।

– मुस्कान गर्ग (रामपुराफूल)

डॉक्टर : कमजोरी है फल खाया करो, छिलके सहित।

(एक घंटे बाद)

रामू : मेरे पेट में दर्द हो रहा है।

डॉक्टर : क्या खाया था?

रामू : अन्नानास और नारियल छिलके सहित।

★ ★ ★ ★ ★

निष्ठा : (मेहमान से) जब मैं दो साल की थी तो छत से गिर गई थी?

मेहमान : फिर क्या तुम बच गई थी?

निष्ठा : पता नहीं, उस समय मैं बहुत छोटी थी।

★ ★ ★ ★ ★

लाली अरे मोना आजकल तो तू अंग्रेजी बहुत बोलती है?

मोना : अरे दीदी पेपरों में मैंने अंग्रेजी का पूरा पेपर चबा लिया था।

– गुरुचरण आनन्द (लुधियाना)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 म	ध्य	2 प्र	दे	3 श	■
द्रा	■	भा	■	4 नि	ज
5 स	6 दै	व	■	वा	■
■	नि	■	7 प	र	8 म
9 सु	क	10 रा	त	■	दा
दा	■	11 ज	न	12 व	री
13 मा	लि	न	■	र्ग	■

प्रस्तुति : विभा वर्मा

प्रश्न तुम्हारे, उत्तर हमारे

प्रश्न : लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम कहाँ पर है?

उत्तर : लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम हैदराबाद में है। यह क्रिकेट स्टेडियम है। शुरू में इसका वास्तविक नाम फतेह मैदान था। 1967 में इसका नाम बदलकर लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम रख दिया गया। यह स्टेडियम हैदराबाद क्रिकेट टीम के लिए गृह मैदान है।

प्रश्न : मानसरोवर झील किस देश में है?

उत्तर : मानसरोवर एक ताजे पानी की झील है। जो तिब्बत में है। इसके पश्चिम में राक्षसताल झील है और उत्तर में कैलाश पर्वत है। यह समुन्द्र तल से 4,556 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। मानसरावेर दुनिया में सबसे ऊँचाई पर स्थित ताजे पानी की झील है।

प्रश्न : विवेकानन्द रॉक मैमोरियल कहाँ स्थित है?

उत्तर : कन्याकुमारी में समुद्र में स्थित दो चट्टानों पर।

प्रश्न : भारत का कुम्भ मेला कहाँ–कहाँ लगता है?

उत्तर : भारत का कुम्भ मेला प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन तथा नासिक में लगता है।

प्रश्न : कुचिपुड़ी किस राज्य का प्रमुख नृत्य है?

उत्तर : आन्ध्र प्रदेश का।

प्रश्न : नासिक किस नदी के किनारे पर बसा है?

उत्तर : गोदावरी नदी के तट पर।

हँसती दुनिया परिवार की ओर से

जन्म दिन की शुभकामना

चाहत (सिवनी)

पुनीत (सिवनी)

कृतिका (तारकपुर)

सक्षम (सिडको)

पुण्या (दिल्ली)

अंकित (रीवा)

प्रमेश (दिल्ली)

अर्पित (टोंक)

शिवेन्द्रा (आकोट)

सई (ठाणे)

कमल (सैनणी)

अहेम (चण्डीगढ़)

नितप्रीत (रोपड़)

वंशिका (दारोसलम)

कीर्ति (किंलियावाली)

प्रेरित (दिल्ली)

विवेक (यमुनानगर)

भव्य (सिवनी)

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

रंग बिरंगी होली

रंग बिरंगी होली,
खेलें मिल हमजोली।
भेदभाव को त्यागें,
बोलें मीठी बोली।

खुशियों का त्योहार,
बढ़ता दिल में प्यार।
अपने से लगते सभी,
निजता का व्यवहार।

धर्म जाति से ऊपर,
प्यार लुटाते बढ़ कर।
हँसते गाते सारे,
मानवता में रह कर।

तीखी कड़वी बोली,
जो हो ली सी हो ली।
भूलो सब तकरारें,
सुन मेरे हमजोली।

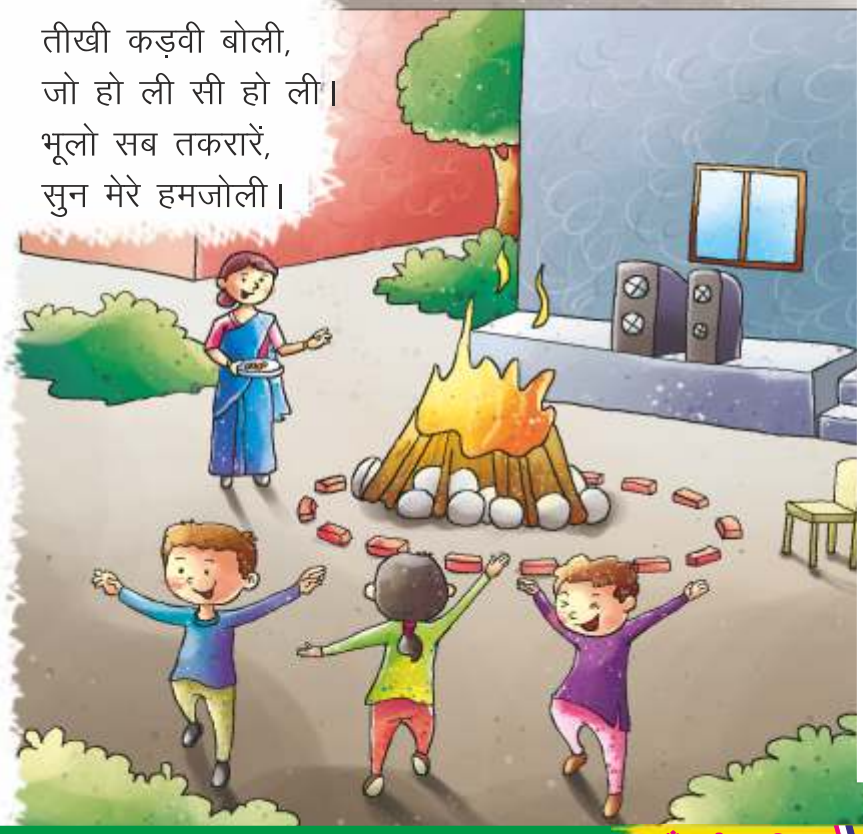

जली होली

गाँव गली घर चौबारे,
नदी नालों के किनारे।
खिल उठे पलाश लाल,
जली होली मगन सारे।

बाल वृद्ध धूम मची,
लाल पीले रंग रची।
रंग उठा है पोर पोर,
जगह अब न कोई बची।

चौपाल पर फ़ाग गाते,
झुण्ड मस्तियां लुटाते।
मस्त गीत होली के,
कदम बहक बहक जाते।

उत्सव अपनत्व का है,
समता समत्व का है।
तन मन को रंग रहा,
भाव एकत्व का है।

जनवरी अंक का रंग भरो परिणाम

1

कृष्णकान्त राजपूत
आयु 11 वर्ष
गाँधी नगर, तिरवा गंज
कन्नौज (उ. प्र.)

2

आरती
आयु 14 वर्ष
2, ट्रस्ट लेन,
द माल, भटिण्डा (पंजाब)

3

महिका खन्ना
आयु 12 वर्ष
2क 18, मानू मार्ग हाउसिंग बोर्ड,
अलवर (राज.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सृष्टि वैष्णवी विष्ट (सरस्वती विहार, गोपेश्वर), सिमरन चोपड़ा (आदर्श नगर, फगवाड़ा), दीप्ति राणा (धनास, चण्डीगढ़), सुमन प्रजापति (सेक्टर 30 गाँधी नगर), निहारिका आहूजा, लवलीन आहूजा (फेस–11, मोहाली), पीयूष कुमार (महाराजा यादविन्द्रा ऐन्कलेव, पटियाला), संध्या रमेश सरोज (जेकब सर्कल सास्त, मुंबई), नम्रता (भाइआणा बस्ती, बुढलाडा), सिमरण रायकूनी (गोला मोहल्ला, अलमोड़ा), अद्वितीय मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर), समिका वाधवानी (कुबेरा संकुल, पूणे), पीयुष अग्रवाल (बिन्नागुड़ी), विधान तिवारी (खेरसा विधनू, कानपुर), अभ्युदय सिंह (जलालपुर, अम्बेडकर नगर), सुभ्रांश जायसवाल (शिवमंदिर के पास, सागर), कृष्णा शर्मा (कृष्णपुरी, जयपुर), अभिषेक जैन (ज्योति कालोनी, दिल्ली)।

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 मार्च तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पसन्द किये गये श्रेष्ठ चित्रों के पाँच प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मई अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

बुद्धि की परख

–प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

नीचे उछल–कूद करने वाले जानवर को ध्यान से देखो और बताओ इसका मुंह, गर्दन, धड़, पैर और पूंछ वास्तव में कौन–कौन से जानवरों की है?

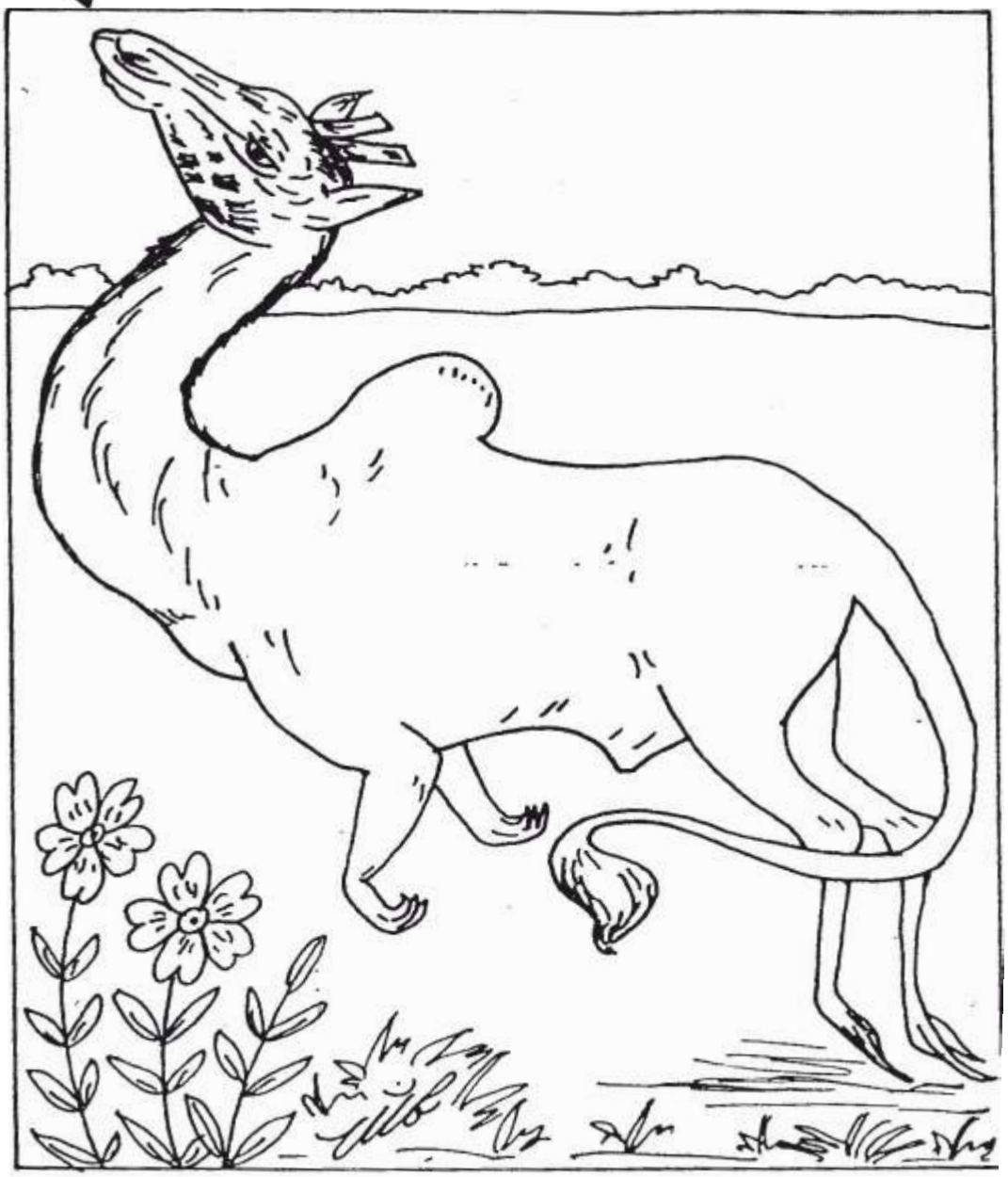

उत्तर :– मुँह जिराफ का, गर्दन ऊँट की धड़ बैल का, पैर कंगारू के व पूंछ शेर की है।

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

सन्त निरंकारी
(ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र
(तीन भाषाओं में)

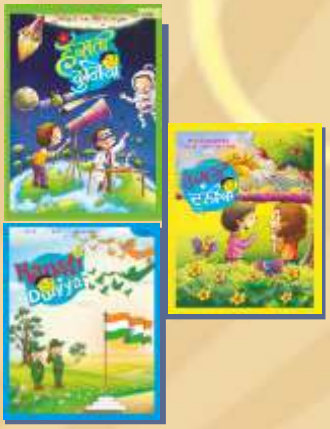

हँसती दुनिया
(चार भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI-400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan, #7, Govindan Street, Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai, CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, Kazidiha, Post Madhupatna, CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan, No. 6-2-970, Khairtabad, HYDERABAD-Pin : 500 029
Ph. 0104-23317879

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 31, Pratapganj, VADODARA-390002 (Guj.)
Ph. 0285-275068

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 88, Rattanvillas Road, Southend Circle, Basavangudi, BENGALURU-560 004 (Karnataka) Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan, KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
: Licence No. U (DN)-23/2015-17
: Licenced to post without Pre-payment

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share your talent in form of painting, poetry & story

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)